5673

कामिनाला

(काम की खोज में)

मुण्डा इनुंग (मुण्डारी नाटक)

मंगल सिंह मुण्डा

कामिनाला

(काम की खोज में)

मुण्डा इनुंग (मुण्डारी नाटक)

कामिनाला

(काम की खोज में)

मुण्डा इनुंग (मुण्डारी नाटक)

ओओल निः
मंगल सिंह मुण्डा

प्रकाशक
झारखण्ड झरोखा, राँची

ISBN : 978-93-81720-28-8

प्रथम संस्करण : 2013

सर्वाधिकार © : लेखक

प्रकाशक : झारखण्ड झरोखा

दुकान न.– डी. जी. 03

न्यू बिल्डिंग, न्यू मार्केट,

रातू रोड, राँची, (झारखण्ड), पिन न. 834001

मो. 09973112040, 09471160792

ई–मेल : jharkhandjharokharanchi@gmail.com

मुख्य वितरक : क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी

28, शॉपिंग सेन्टर, कर्मपूरा, न्यू दिल्ली–110 015

दूरभाष : (ऑ) 25465978, 65903449 (निवास) : 28542847

ई–मेल : classicalpc@gmail.com

अजिल्द : ~~150.00~~ 100/-

सजिल्द : 200.00

नोट : रचना से संबंधित किसी भी प्रकार के वाद–विवाद के लिए प्रकाशक जिम्मेवार नहीं हैं।

KAMINALA (Mundari Drama)

By Mangal Singh Munda

दो शब्द

इसु पुराः रासिका रेआः काजि चि मंगल सिंह मुण्डा ताकिन ओलाकाद कामिनाला इनुंग (नाटक) किनाब रुप रे आबु ताला रे लेलोः ताना। रेंगेः बलाए ते बांचाओन नागेन आबुआः होड़ो को आपान हातु बागे केयाते एटाः कोते को सेनो गिड़िताना आर एन लेकाते आबुआः सांगि पेड़ेः घटाओं इदिओः ताना आर आबुआः नारा दुरा चाबाओं ताना। मिद सोमाए राजा काजिओः तान होड़ोको कोएँ तान लेका बु बाईओः ताना। आबु चिलकाते नेकाबु रिकाओ ताना आर चिलकातेबु बांचाओगा मेनेआः इनुंग किताब ते मुण्डिओः आ।

ओओल निः आर छाआपा निः बाराकिन गे ने बुगिन कामि रेआ जोआर किन नामेका।

राम दयाल मुण्डा
पूर्व कुलपति
राँची विश्वविद्यालय, राँची

सम्मति

'कामिनाला' (काम की खोज में) नाटक मंगल सिंह मुंडा का अनुकरणी अवदान है। 'छैला संदु' (हिन्दी उपन्यास) के माध्यम से साहित्य जगत में उनकी एक पहचान बन गयी है। उनकी यह पहचान 'कामिनाला' के माध्यम से मुंडारी समाज में प्रतिष्ठित होगी। मुंडारी साहित्य को श्री मुंडा इसी तरह अनवरत समृद्ध करते रहें, यही कामना है।

विसेश्वर प्रसाद केशरी
22.4.10

दो शब्द

श्री मंगल सिंह मुण्डा मुंडारी भाषा के सफल साहित्यकार हैं। इससे पहले उनका उपन्यास 'छैला सान्दु'' प्रकाशित हो चुका है और लोकप्रिय भी हुआ है।

कामिनाला उनका प्रथम नाटक है। इसे समस्या प्रधान नाटक कहा जाएगा। नाटक का मूल विषय आदिवासी युवतियों का महानगरों की ओर पलायन है। आरंभ में महिलाओं का काम की खोज में निकलना दूसरे अर्थ में था, लेकिन समय बीतने के साथ अवैध व्यापार के रूप में रूपांतरण हुआ। पहले गई हुई युवतियाँ सहायक या मददगार के रूप में गईं। आदिवासी सोच के तहत नौकर भी आदमी होता है। वहाँ उसके काम के कारण नहीं, मनुष्य होने के कारण मूल्य है। परन्तु पूँजीवादी समाज में चल-अचल संपति की अवधारणा है। जिसके चलते काम की खोज में गई युवतियाँ भोगवादी संस्कृति की संपत्ति बन जाती हैं। उनका सामाजिक स्तर शून्य पर स्थिर हो जाता है।

अनेक संस्थाओं और व्यक्तिगत प्रयासों के बावजूद यह समस्या विकराल होती जा रही है। नाटककार की दृष्टि, कि भुक्तभोगी ही उठ कर इस समस्या का प्रतिरोध कर हल निकाल सकते हैं, सही दृष्टि है। इस नाटक का मंचन समाज के बीच अवश्य होना चाहिए ताकि बाहरी दुनिया को समझने की शक्ति सीधे-सादे ग्रामीणों को मिले। नाटक मंचन योग्य और सरल भाषा में है। लेखक बधाई के पात्र हैं।

रोज केरकेट्टा

दो शब्द

मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि साहित्य की एक विधा के रूप में मुण्डारी साहित्य में ''कामिनाला'' (काम की खोज में) मुण्डारी नाटक जुड़ गयी है। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है जो मुण्डारी साहित्य के विकास में एक पहली कड़ी का काम करेगा।

मैंने प्रस्तुत नाटक को अद्योपान्त पढ़ा और पाया कि इस नाटक में जो देश, काल एवं पात्र का चयन किया गया है वह बिल्कुल ही यथार्थ पर आधारित है और कथोपकथन का समाहार भी यथोचित ढंग से हुआ है। भाषा शैली सरल है और घटनाक्रम के अनुसार शब्दों का इस्तेमाल हुआ है। इससे नाटक की रोचकता बढ़ गयी है।

इस पर भी सबसे बड़ी बात यह है कि लेखक ने नाटक के माध्यम से विशेष कर जनजातीय समाज के मजदूरों का शोषण एवं पलायन रोकने का जो प्रयास किया है यह अनुकरणीय है। लेखक का यह प्रयास निश्चित रूप से प्रशंसनीय है और वे धन्यवाद के पात्र हैं।

सोमा सिंह मुण्डा
सहायक निदेशक,
झारखण्ड जनजातीय कल्याण
एवं शोध संस्थान, राँची

दो शब्द

कामिनाला (मुण्डारी) नाटक आप के हाथ में है। यह यथार्थवादी नाटक है, समस्यावादी नहीं। समस्या तो समग्र में आती है। यथार्थ उन बहुत सारी समस्याओं के भीतर गहरे पैठ लगाए समस्या है। इसे समस्या प्रधान नाटक भी कहा जा सकता है।

यह नाटक आदिवासी समाज की समस्याओं की ओर इंगित करता है। मगर इसका थीम (विषय) उन समस्याओं के भीतर गहरे पैठ लगाए प्रधान समस्या पर आधारित है और वह है-काम की खोज में। आदिवासियों के बीच यह इतनी बड़ी समस्या साबित हुई है कि इसकी पैठ समन्दर पार फिलीपीन, हांगकांग, केन्या, चिली (अमेरिकी) आदि देशों पर भी है। प्रस्तुत नाटक सत्य पर आधारित है। यों भी देश के मीडियाकार हमें पलायन के दुख-दर्दों की आपबीती कहानी सुनाते रहते हैं। इसका थीम भी उसी कड़ी से है। इसलिए मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि कोई सवर्ण आलोचक (आदिवासी आलोचक तो करेगा ही नहीं) इसे बकवास की संज्ञा देने का साहस नहीं जुटा पायेगा। मेरी बुद्धि तो इतना तक मानती है कि इसमें आदिवासी समाज के कोढ़ को ही यथार्थवादी ढंग से सामने रखने का प्रयास किया गया है।

रांची कॉलेज के एक मित्र ने मुझे मुण्डारी नाटक लिखने का सुझाव दिया। नाटक का किस्म दूसरा भी हो सकता है। यों भी यह मेरा प्रकृत पंथ नहीं है। लेकिन समय की मांग, सम-सामयिकता और समाज की विकृति से विवश होकर, घायल हो कर पलायनवाद को चुना। हद तो तब पार होती है, जब जात ही जात को काटती है। लोहा ही लोहा को काटता है। सवर्णों का आदिवासियों पर चिरपरिचित यह दोषारोपण इस पलायनवाद पर सटीक बैठता है।

नाटक (मुण्डारी) लेखन में यह मेरा प्रथम प्रयास है। सही या गलत मैं समझता हूं कि इस नाटक के माध्यम से मैंने समाज की कड़ुवी सच्चाईयों को उजागर करने की चेष्टा की है। इस नाटक का संदेश 'आत्माराम का तोता'

कहानी को उत्प्रेरित करता है, शिकारी आयेगा, जाल बिछायेगा, लोभ से उसमें फंसना नहीं चाहिए। हां, यह नाटक एक कदम और आगे प्रतीत होता है- यदि फंसना ही चाहते हो तो चिड़िया बनकर नहीं, हाथी बनकर ताकि शिकारी का जाल ही टूट-फट जाए। इस नाटक की संगीता यही करने जा रही है।

बहरहाल, मैं आशावान हूं कि पाठक कामिनाला (काम की खोज में) को पसंद करेंगे और रगकर्मी इसे मंचन योग्य समझेंगे।

मंगल सिंह मुण्डा

लेपेल-चिपिना

कोड़ा जाति को

1. कारोड़ीमल मित्तल - दिल्ली शहर रेन पुजी गिड़ीयकन होड़ो।
2. आमीत गुड़िया - मुखियाः कोड़ा ते।
3. नान्दलाल डुंगडुंग - सहारा इंटरप्राइजेज, दिल्ली रेन गाईदार।
4. प्रभुदयाल तिरू - दुकु तन संगीता तिरू : अपुते।
5. लाटपाट सिंह - दरोगा, दिल्ली।
6. खाटपाट सिंह - सिपाही, दिल्ली।
7. वेंकटेश्वर पिल्लई - ह्यूमन राईट ला, दिल्ली रेन मरंग गोमके।
8. बाकुआ - दरोगाः चपरासी।

कुड़ी - जाती को

1. संगीता तिरू - सिगिद तन कुड़ि होन (प्रभुदयालः होन)
2. ज्योति मिंज - सहारा इंटरप्राइजेज, दिल्ली रेन गाईदार किंग।
3. मालती होरो - सहारा इंटरप्राइजेज, दिल्ली रेन गाईदार किंग।
4. शान्ति तोपनो - संगीताः सोगे।
5. रूपा - पंचायत रेन मुखिया।
6. राधा मित्तल - कारोड़ीमल कुड़ी ते।
7. रागिनी तिरू - प्रभुदयालः कुड़ी ते।

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र

1. करोड़ीमल मित्तल - दिल्ली शहर के धनाढ्य व्यक्ति।
2. अमीत गुड़िया - मुखिया का पति।
3. नंदलाल डुंगडुंग - सहारा इंटरप्राइजेज दिल्ली का एजेंट।
4. प्रभुदयाल तिरू - दुखित संगीता के पिता।
5. लटपट सिंह - दारोगा, दिल्ली।
6. खटपट सिंह - सिपाही, दिल्ली।
7. वेंकटेश्वर पिल्लई - ह्यूमन राईट लॉ दिल्ली के अध्यक्ष।
8. बकुआ - दारोगा का चपरासी।

नारी पात्र

1. संगीता तिरू - पीड़िता (प्रभुदयाल की बेटी)।
2. ज्योति मिंज - सहारा इंटरप्राइजेज, दिल्ली की एजेंट।
3. मालती होरो - सहारा इंटरप्राइजेज, दिल्ली की एजेंट।
4. शान्ति तोपनो - संगीता की सहेली।
5. रूपा - पंचायत का मुखिया।
6. राधा मित्तल - करोड़ीमल की पत्नी।
7. रागिनी - प्रभुदयाल की पत्नी।

काड़ी - 1

लेपेल - 1

ठांव - कारोड़ीमल मित्तलः बंगला।

सोमय - सेतः सात बाजे।

होला-होला गे ने नावा कोन्या राधा दोको अँड़न्दि आउ तःईया। सेतः बिरिद जान लोःगे अकिंगः नागेन स्टोव रे चाय बाईः अचुआ काना। कोड़ा ते करोड़ीमल दो ओड़ाः बितर सः रे मेनईया। चाय बईतन-बईतन लोः गे राधा जोर तेः किकिः जदा- इश..श...ई..आ...आ..। एन लोः गे कोड़ा ते अईउम नम तःई चि निराउ जदा।

कारोड़ीमल - चिका जनम?

राधा - लो जनईंग।

कारोड़ीमल - कोतः रे?

राधा - ती डॅड़ोंः रे।

कारोड़ीमल - कोरेः, दे... *(डड़ोंः कोए चपुबेड़ा जःईया)*। पुरः गेचि हसु जः मा?

राधा - हे। बेटेकन हमु जःईया। हाय तईंग दो..। दोला डाक्टर तः इदिंग में। हाय...।

कारोड़ीमल - उँहुँ, बड़ा का ठीक जना। नाः गे सहारा इंटरप्राइजेज केईंग फोन जःईया।

राधा - सहारा इंटरप्राइजेज!

कारोड़ीमल - हे *(बर्नल मल्हमेः लगव जःईया)*

राधा - चिकनः मेन्ते? हाय, लो तान लेका हासु जःईयां।

कड़ी - 1

दृश्य - 1

स्थान - करोड़ीमल मित्तल का बंग्लो।

समय - सवेरे सात बजे।

अभी हाल ही में राधा को विवाह कर लाया गया है। सवेरे-सवेरे उठ कर पति-पत्नी दोनों के लिये स्टोव कर चाय बनाने लगती है। पति अंदर में है। चाय बनाते-बनाते राधा अचानक चीखने लगती है-इश..श...ई...आ..आ...। चीख सुनते ही करोड़ीमल उसके पास आता है और प्रश्न पूछता है।

करोड़ीमल - क्या हुआ?

राधा - जल गई।

करोड़ीमल - कहाँ?

राधा - हाथ की उंगली में।

करोड़ीमल - कहां देखें *(उंगलियों को देखता-पकड़ता है)* दर्द होता है?

राधा - हां, बहुत ज्यादा दर्द हो रहा है, हाय....ओ...हो...हो...। चलो डॉक्टर के यहां ले चलो...। हाय...।

करोड़ीमल - आह! यह तो ठीक नहीं हुआ। अभी तुरंत सहारा इंटरप्राइजेज को फोन करता हूं।

राधा - सहारा इंटरप्राइजेज!

करोड़ीमल - हां *(बर्नल मलहम लगाता है)*

राधा - क्यों? हाय, बहुत जलन हो रहा है।

कारोड़ीमल - पुरः गे का ठीक जान काजि। चम्पा बा लेकन होड़ोमो सुगड़ा भलम लोन गना। मियद कमिड़ि कुड़ी लंग दोईया।

राधा - कामि तान कोरे दो टो-टोः गेया।

कारोड़ीमल - का गतिंग। का गे (नाः गे ज्योति कुड़ींग फोन जःईया) गापा ते कामि गे अलोम कामिया *(जोआ रेः चोः जःईया)*

राधा - ज्योति! ओको ज्योति?

कारोड़ीमल - 'सहारा इंटरप्राइजेज' चलव तान कुड़ि होन।

राधा - वाह! खूब सुगड़ाए लुतुमा काना ज्योति। चनः कोको कामि ताना, सहारा आर ज्योति वाह! नर्सिंग होम जाः?

कारोड़ीमल - दिल्ली रे दासी कमिड़ी कोरेन गाईदार।

राधा - उस्य! आदिवासी।

कारोड़ीमल - हे! झारखण्डी।

राधा - ओह बपुड़ि! चिलका लुतुम, एना रः उल्टा कामि!

कारोड़ीमल - ओ बपुड़िः माने?

राधा - अकोआ दिसुम रे दो कमि- उदम चि बनोगा, नमिन दूर दासी-कमिड़िन को हिजुः तना। रेंगे ताना को जाः?

कारोड़ीमल - हुं, इन्कुअः दुकु ते आमाः इतिल शेर ताना! गापा गे कामिड़िंग नम जःईया।

दनंग

करोड़ीमल - यह तो बहुत बुरा हो गया। चम्पा फूल सा हाथों को भला तू ने जला डाला। एक नौकरानी को रखेंगे। कल से तुम यह सब काम मत करना।

राधा - कोई बात नहीं। काम करते-करते तो दुर्घटना होती ही है।

करोड़ीमल - नहीं। नहीं प्रिये नहीं। अभी ज्योति को फोन लगाता हूं। कल से तुम काम नहीं करेगी। *(गाल पर चुमा देता है)*।

राधा - ज्योति! कौन ज्योति?

करोड़ीमल - सहारा इंटरप्राइजेज चलाने वाली ज्योति।

राधा - वाह! क्या सुंदर नाम रखी है ज्योति। वैसे क्या सब काम करती होगी? 'सहारा' और 'ज्योति'। वाह। शायद नर्सिंग होम वगैरह?

करोड़ीमल - दिल्ली का 'ट्रफिकिंग एजेंट' है।

राधा - उस्य! आदिवासी?

करोड़ीमल - हां। झारखण्डी है। दर्द कम हुआ?

राधा - ओह बेचारा। जैसा नाम, काम उसके उलट है। दर्द थोड़ा कम हो गया है।

करोड़ीमल - 'ओह बेचारा' माने क्या?

राधा - उनके देश में क्या काम-धाम नहीं, इतनी दूर नौकर नौकरानी के लिये आते हैं? वो लोग बेहद गरीब हैं शायद?

करोड़ीमल - हूं, उनके दुख-दर्दों से तुम्हारी चर्बी पिघलने लगी है क्या? कल ही तुम्हारे लिये नौकरानी की व्यवस्था करता हूं।

पटाक्षेप

लेपेल - 2

ठांव - सहारा इंटरप्राइजेज रः कमि ओड़ाः

सोमय - सेतः सात बाजे।

टेबुल जपः रे बरिया कुड़िहोन किंग दुबा कना। मियद दो खाताए ओटाः तादा। ओड़ो मियद दो खबर कागजेः पढ़ाव ताना। एन लोः दो नियाः मोबाईल साड़ि ताना।

ज्योति - हैल्लो! हैल्लो, ओकोए जागार जादा?

कारोड़ीमल - हैल्लो मेडम आईंग करोड़ीमल मित्तल, गजियाबादा ते।

ज्योति - हां, जागरे मे साहेब।

कारोड़ीमल - आईंग मियद कमिड़ि कुड़िहोन चाई। पढ़ावा कानिः। आर गापा गे।

ज्योति - हाँ, नामा माईंग साहब। मगर 10-12 दिन लेका सोमय ओमाईंग में।

कारोड़ीमल - हे मार।

ज्योति - चिमिनंग टकाम ओमेया?

कारोड़ीमल - पांच हजार।

ज्योति - कागे। पढ़ावा कान कोरे दो पन्द्रह हजार ले आउ जादा।

कारोड़ीमल - अच्छा 10 हाजार रे बईयोः का।

ज्योति - ओड़ोः मिद हाजार ओम ताम।

कारोड़ीमल - हे मार। तोबे दो 11 हाजार।

ज्योति - हे।

कारोड़ीमल - ओ. के.।

दनंग

दृश्य - 2

स्थान - 'सहारा इंटरप्राइजेज' का कार्यालय।

समय - सबेरे सात बजे।

टेबुल के सामने दो लड़कियां बैठी हैं। एक खाता खोली हुई है। दूसरा अखबार पढ़ती है। तभी एक का मोबाइल बज उठता है।

ज्योति - हैल्लो...हैल्लो..कौन बोल रहे हैं?हैल्लो!

करोड़ीमल - हैल्लो मैडम, मैं करोड़ीमल मित्तल गाजियाबाद से।

ज्योति - हां, कहिये साहब।

करोड़ीमल - मुझे कल ही एक पढ़ी-लिखी नौकरानी चाहिए।

ज्योति - हां। उपलब्ध कराऊंगी साहब। पर 10-12 दिन का समय दीजिए।

करोड़ीमल - अच्छा, ठीक है।

ज्योति - कितना देंगे, सर?

करोड़ीमल - पांच हजार।

ज्योति - नहीं साहब नहीं। पांच हजार में काम नहीं बनेगा। पढ़ी-लिखी होने से हम पंद्रह हजार लेते हैं।

करोड़ीमल - अच्छा दस हजार देते हैं।

ज्योति - और एक हजार दे दीजिए सर।

करोड़ीमल - अच्छा ठीक है। तब ग्यारह हजार में तय हुआ।

ज्योति - हां, सर।

करोड़ीमल - ओ के।

पटाक्षेप

लेपेल - 3

ठांव - सिदा तः गे।

सोमय - एन सोमय रेगे।

एन लोः नन्दलाल, चाय नू तन लोः ए हिजूः ताना।

नान्दलाल - ओकोए लोः बेन जागार तान नई केना?

ज्योति - गजियाबाद रेन मियद साब के तगड़ा माल चाई।

नान्दलाल - हुँ, कमीशन?

ज्योति - 11 हाजार।

नान्दलाल - तोबे दो मालदार साब गे तनिः। चिलका तोबे?

ज्योति - प्लान बई में। बुगिन कमि रे हेड़ा-बेड़ा चिलका?

नान्दलाल - गापा अबेन खूँटी सेनोः बेन। चि मालती चिलका?

मालती - हे मार।

नान्दलाल - नाःगे आईंग आमीत केईंग फोन जःईया। (मोबाईल रे नम्बरे : जोका जादा) हैल्लो, हैल्लो आमीत....।

आमीत - हैल्लो, हैल्लो मामु (नम्बरेः अरूम जादा)

नान्दलाल - मियद तगड़ा माल चाई। पढ़ावा कानिः।

आमीत - उम्र?

नान्दलाल - 14-15 बरस लेका।

आमीत - हेगा मामु मार। अलोम उडुगा। खूँटी रेगे को नमोगा।

ज्योति - चनः ए मेन?

नान्दलाल - अबेन के माल आगुई रः कुल तद बेना।

मालती - रिजर्वेशन?

दृश्य - 3

स्थान - पूर्ववत।

समय - पूर्ववत।

इसी समय चाय पीते हुए नंदलाल आता है। और उन दोनों को पूछता है।

नंदलाल - किसके साथ बात कर रही थी?

ज्योति - गाजियाबाद के एक साब को तगड़ा माल चाहिए।

नंदलाल - हुं, कमीशन?

ज्योति - ग्यारह हजार।

नंदलाल - अच्छा। तब तो मालदार साब ही लगता है। तब कैसा?

ज्योति - प्लान बनाइए। और क्या?अच्छे काम में देर कैसा?

नंदलाल - कल तुम दोनों खूंटी जाओ। क्यों मालती ठीक है न?

मालती - ठीक है।

नंदलाल - अभी तुरंत अमीत को फोन करता हूं। (फोन में नंबर मिलाता है) हैल्लो...हैल्लो..अमीत।

अमीत - हैल्लो मामा (नंबर को पहचानता है)

नंदलाल - भगीना एक तगड़ा माल चाहिए। पढ़ी-लिखी।

अमीत - उम्र?

नंदलाल - यही कोई 14-15 साल की।

अमीत - अच्छा मामा। चिंता की बात नहीं। खूंटी में ही मिल जायेंगे।

ज्योति - अमीत क्या बोला?

नंदलाल - तुम दोनों को माल लाने के लिए कहला भेजा है।

मालती - रिजर्वेशन?

नान्दलाल - जेनेरल बोगी रेगे सेनोः बेन। पाईसा लागेद दो तकलीफो सहतींग लगातिंगाआ दो। हा...हा...हा....।

बारन किंग - 11 हाजार! मिद-मिद हाजार बख्शीश ही..ही..ही..।

नान्दलाल - हे मार।

(नान्दलाल बितर ते बोलो ताना)

दनंग

लेपेल - 4

ठांव - सिदा तः रेगे।

सोमय - एन सोमय रेगे।

एक-एक हाजार टाका नमोः तान चि ज्योति आर मालती किंग रासिका चाबा ताना। अकिंग-अकिंग किंग जपागर ताना।

ज्योति - आम दना चनः म किरिंगया?

मालती - सूटकेस। अमदो?

ज्योति - आईंग दो ओड़ोः हुड़िंग पैसा लगाव केयाते सोना रः चेनेईंग किरिंगया।

मालती - आउ! आईवोदाई माला गेईंग किरिंगया (खातए दपल जादा, कुड़म, होटोः कोए चपुन ताना)

ज्योति - जू तोबे किचिरि को सफाइए में। गापा दोलंग सेनोःगा।

मालती -बेस गे।

दनंग

नंदलाल - जेनेरल बोगी में ही जाओ। पैसे के लिए तो तकलीफ उठाना ही पड़ता है। हा...हा...हा...।

समवेत स्वर में - ग्यारह हजार। एक-एक हजार बख्शीश हि...हि...हि...।

नंदलाल - ठीक है। राजी हूं।

(नंदलाल अंदर जाता है)

पटाक्षेप

दृश्य -4

स्थान - पूर्ववत।

समय - पूर्ववत।

एक-एक हजार रुपये बख्शीश के रूप में प्रत्येक को मिल रहा है। इसलिए वे खुशी में झूम उठती है। आपस में बातचीत करती हैं।

ज्योति - तुम क्या लोगी रे?

मालती - सूटकेस। और तुम?

ज्योति - मैं तो और कुछ रुपये लगाकर सोने का चैन खरीदूंगी।

मालती - अरी दीदी! मैं भी चैन ही खरीदूंगी। (खाता बंद छाती और गले पर हाथ फेरती है)

ज्योति - जाओ तब। कपड़ा-उपड़ा साफ करो। कल तो जायेंगी।

मालती - ठीक है।

(वह उठती है)

पटाक्षेप

लेपेल - 5

ठांव - रेलगाड़ी भीतर रे।

सोमय - तिकिन सिंगि।

ज्योति आर मालती गाड़ी रेकिंग दुबा काना। आर किंग जपागर ताना।

मालती - दाई ना?

ज्योति - चनः गे?बोरोआन गेम जागार जादा।

मालती - बोरो हेगे। का बोरो हेगे। ने, अम फेटाव में (तासेः ओमाई तना)

ज्योति - हँ, मार काजि में (तासेः फेटाव ताना)

मालती - होड़ो को जाः को इतु केरे दो!

ज्योति - हे, मेन्दो...(पत्ताए हटिंग जादा)

मालती - मेन्दो चना? (पताए पिति ताना)

ज्योति - नेकन कमि कोरे दो बोरो-सोरो, दया-धोरोम सोबेन रिड़िंग लगातिंगआ।

मालती - अँ!! (पत्ता तेरोः होका जादा) दया-धोरोम....।

ज्योति - बोरो जादाम चिना? ने अम फेटाव में (अए तास केः ओमाइ ताना)

मालती - हे ना दाई। कुड़म दोपोल - दोपोल ताना।

ज्योति - तोबे दो नेकन कमि कोरे चियाःम हड़ागुआ कना? जू रूड़ा में। सारना सुबा रे सिंह बोंगा अरदासी में। आमते नेकन कामि को का हो होबागा। खीस्तान कुड़ी कोम लेल जः कोआ?

मालती - का। काईंग इतुआना।

दृश्य - 5

स्थान - रेलगाड़ी के अंदर।

समय - दोपहर दिन।

ज्योति और मालती गाड़ी में बैठी है। आपस में ताश की पत्तियां फेंकते हुए वार्तालाप करती हैं।

मालती - दीदी?

ज्योति - क्या?डरने जैसा बात करती हो।

मालती - हां दीदी। डर भी। और नहीं भी। लो तुम एक बार फेटो (ताश देती है)

ज्योति - हां, अब बोलो (ताश फेटती है)

मालती - लोग जान जायेंगे तो?

ज्योति - हां, लेकिन....(ताश बांटती है)

मालती - लेकिन क्या?(पत्ती देखती है)

ज्योति - ऐसे काम में तो डर, दया-धर्म सब भुला देना पड़ता है।

मालती - अं! (पत्ता फेंकना बंद करती है) दया-धर्म?

ज्योति - तुम्हें डर लगता है?लो फेटो (ताश देती है)

मालती - हां दीदी। मुझे तो छाती धक-धक करने लगा है।

ज्योति - तब तो ऐसे कामों में उतरी ही क्यों?जाओ लौट जाओ। सरना माई के सामने सिंहबोंगा का नाम लो। तुमसे ये सब काम नहीं होगा। खीस्तान लड़कियों को देख रही हो?

मालती - नहीं। नहीं जानती हूं।

ज्योति - ने पढ़ाव में (खबर कागजेः ओमाई ताना)

मालती - (अखबारेः पढ़ाव ताना) अरे नका! - खूँटी की लड़की मरियम तिग्गा दलाल द्वारा दिल्ली में दो मालिकों के हाथों बेची गयी...।

ज्योति - आर एन दलाल कोआः लुतुमेम इतुआना?

मालती - का गे।

ज्योति - मरकुस, मगदली आर ग्रेस। दिल्ली रेगे एजेंसी को खोलव तदा। निकुआः दया धोरोम बनोगा?

मालती - अबु दोड़ोः ख्रीस्तान कोचि?

ज्योति - आको दो आबुआ ते को सेन अयर तादा। अबु मार तयोम-तयोम ते हि...हि...हि...। ने, जी लगा जाना। तास के ओमाई ताना।

(चनाचूर वालाए हिजुः ताना)

सफर का साथी दिलदार
ले लो खाने में मजेदार
चनाचूर गरम....
एअ, चनाचूर, दो जगह देना...अ...अ।

दनंग

लेपेल - 6

ठांव - कदमा।

सोमय - 10 बाजे सिंगि।

10 बाजे सिंगि संगीताः सोंगे शान्ति अयाः ओड़ाः ते हिजुः ताना। संगीता एसेकर गे ओड़ाः रे मन्डि उतु ताना। शान्ति

ज्योति - लो इसे पढ़ो। (अखबार देती है)

मालती - (अखबार पढ़ती हुई) अरे ऐसा! - खूंटी की लड़की मरियम तिग्गा दलाल द्वारा दिल्ली में दो मालिकों के हाथों बेची गयी।

ज्योति - और उन दलालों के नाम जानती हो?

मालती - नहीं।

ज्योति - मरकुस, मगदली और ग्रेस। ये दिल्ली शहर में ही एजेंसी खोले हुए है। इनका दया-धर्म नहीं है क्या?

मालती - हम क्या ख्रीस्तान हैं?

ज्योति - वो हम लोगों से आगे बढ़े हुए हैं। चलो हम भी पीछे-पीछे ही सही हि...हि...हि...। (लो मन थक गया।) तुम एक स्वार। (ताश देती है)

(चनाचूर वाला आता है)

फर का साथी दिलदार
ले लो खाने में मजेदार
चनाचूर गरम....।
ए चनाचूर, दो जगह देना आ...आ..आ..आ...।

पटाक्षेप

दृश्य - 6

स्थान - कदमा गांव

समय - 10 बजे सबेरे।

10 बजे सबेरे संगीता की सहेली शांति संगीता के घर आती है। घर में वह अकेली है। इसके माता-पिता कहीं गये हैं।

दुआरा तेगे ककला जादा।

शान्ति - ओकोए मेनः पेया ओड़ाः किसन को?

(संगीता दुअर ताःए हिजुः ताना)

संगीता - मेना लेया (चिना किः लोः) आउ, आम चि हतोम। देला बोलो में।

शांति - ओड़ोः कोदो?

संगीता - एयंग - आबा तकिंग दो होला रे कुपुलोः तिकिंग जाना। तिसिंग दो जाः किंग हिजुगा। ओड़ाः रे दो बाबू आर आईंग बारि गेयलिंग। मार दुब में।

(परको मेंः उदुबाई ताना)

शान्ति - उफ! नमिन लोलो (रूमाल तेः जिरेन ताना)

संगीता - चिकायाबु हतोस तोबे?जेटे सिंगि दो लोलो गेया।

शान्ति - कागे भगिनी, सोबेन मुलि नेका दो का लोलो ताना।

संगीता - इदोड़ोः तोबे?आईन जेता तेव काईंग सेन बेड़ा कना (जूलाए ओंग ताना)

शान्ति - एयंग- आबा तकिंग जॉ तेव ककिंग ईदि बेड़ा माँ?

संगीता - कागे (अड़ाः ए हद ताना) पढ़ाव रः तेव काईंग सेन बेड़ा ताना।

शान्ति - ओको क्लास रेम पढ़ाव ताना?

संगीता - 10 रे (दः ए ओमाई ताना)

शान्ति - अँ...ऊ...अ...दः दो गे तुतुकुन गेया। दिल्ली रः लेका गे। होला-होला गे भतीजा कोड़ा हिजुआ काना। ईनिः जागार ताना एन सः दो नेका दो का लोलो ताना।

संगीता - इदु!

दरवाजे पर आ कर शांति आवाज लगाती है।

शांति - कोई है?

संगीता - हां है (पहचान कर) ओहो फुंफी जी आप। आईए बैठिए।

शांति - और सब?

संगीता - मां और पिताजी तो कल ही मेहमान चले गये हैं। शायद आज आ जायेंगे। घर में बाबू और मैं हैं। आईए। बैठिए। (खाट दिखाती है)

शान्ति - उफ! इतनी गर्मी (रुमाल से चेहरे पर हवा लगाती है)

संगीता - क्या करेंगे फुफी जी। गर्मी का दिन है तो गरम लगेगा ही।

शांति - नहीं भगिनी। सब तरफ ऐसी गर्मी नहीं है।

संगीता - पता नहीं तब। मैं तो कहीं नहीं जाती हूं। (चूल्हा फूंकती है)

शांति - मां-बाप तुम्हें कहीं भी घूमने नहीं ले जाते हैं?

संगीता - नहीं ले जाते हैं। पढ़ाई के चलते भी नहीं जा पाती हूं।

शांति - किस क्लास में पढ़ती हो?

संगीता - 10 क्लास में (पानी का गिलास देती है)

शांति - अं...उ...पानी तो खूब ठंडा है। दिल्ली का पानी जैसा। कल ही भतीजा वहां से आया है। वह बताता है दिल्ली में इतनी गर्मी नहीं है।

संगीता - अच्छा!

शान्ति - हेः मेन, भला। होनोर बड़ा कोदो मोने माँ चि का?

संगीता - मोने दो मोनिंगअ। मेन्दो....(गुचंङ्गे उसुकुर ताना)

शान्ति - हाँ, मेन्दो...

संगीता - स्कूल बगेवा।

शान्ति - छुट्टी दो?

संगीता - होला तेले छुट्टी जाना।

शान्ति - तोबे दो खूब ठीक! दिल्ली सः होनोरेम मोनेया?

संगीता - ओकोए ताको लो?

शान्ति - भतीजा कोड़ा लोः गे बरिया सहेली किंग हिजुः तोरसा काना। जेतन बोरो बनोगा। दोलम सेन रेदो?

संगीता - हे मार।

(संगीताः एयंग- आबा तकिंग बोलो ताना)

शान्ति - आउ! चीगा अबेन गेलिंग उकुता तान नई केना। जी को बेस गेचि। जोअर! (इन किनेः जोअर जः किंगआ)

रागिनी - बेस गे। आपे दो?

शान्ति - आलेव बेस गे।

रागिनी - आलो, चिमिन दिना ते मामु तेयाः ओड़ाः ते कलिंग सेना काना। कने को रः कुल जादा। एना तेलिंग सेन केना। चिलका तोबे, मुसिंग वो काम हिजुआ। नड़ेः मेरेवो।

शान्ति - एनका गे भगिनी, भागीना ताको लोः लेपेल लेका गे।

संगीता - अतेगा एयंग, हतोम तको लोः दिल्लीईंग लेलाउ कोः रे दो?

रागिनी - इदुना? अपुम तोबे कुलि में।

प्रभुदयाल - (एन सः ए हेता ताना) ओकोए-ओकोए पे सेनोः ताना?

शांति - हां, कहां भला। घुमने का मन तो करता है कि नहीं?

संगीता - जाने का तो मन करता है लेकिन...(चूल्हे में लकड़ी सरकाती है)

शांति - हां, लेकिन...क्या?

संगीता - स्कूल छूटेगा।

शांति - छुट्टी नहीं है?

संगीता - कल से ही छुट्टी तो हो गई है।

शांति - तब बहुत अच्छी बात है। दिल्ली घूमने चलोगी?

संगीता - किनके साथ?

शांति - भतीजा के साथ ही दो सहेली आई हुई हैं। कोई डर नहीं। चलो जाओगी तो?

संगीता - ठीक है। जाऊंगी। (संगीता के माता-पिता प्रवेश करते हैं)

शांति - अरे, आप दोनों का ही हम दोनों चर्चा कर रही थीं। सब कुशल-मंगल तो है न! नमस्कार! (दोनों को नमस्कार करती है)

रागिनी - सब ठीक-ठाक है। तुम कैसी हो?

शांति - हम भी अच्छे ही हैं।

रागिनी - अरे कितने दिनों से इसके मामा के घर नहीं गये हैं। बार-बार हमें आने के लिए कहला भेजते हैं। समय मिला तो हो आयी। कैसे तब, किसी दिन भी नहीं आती हो? यहां पास में रहती हो तब भी!

शांति - वैसा ही, भगिनी-भगिना सब को देखने के बहाने आ गई।

संगीता - क्यों मां, फुफी सब के साथ दिल्ली घूमने जाऊँ?

रागिनी - कैसे बताऊं बेटी? पिताजी को पूछो।

प्रभुदयाल - (उधर ताकता है) कौन-कौन जा रही हो?

शान्ति - एना गेलिंग जागार तान नई केना। भातीजा कुड़ि लो बरिया सोंगे दंगिड़ी किंग हिजुआ काना। ने जेटे छुट्टी रे दिल्लीम लेलाउ रेदोइंग मेतई ताना।

प्रभुदयाल - अच्छा, ओड़ाः रेन होड़ो कोगे दंग मार। सेनाउ कोः काए।

रागिनी - चिमतंग सेनोः दो?

शान्ति - गापा सेतः।

रागिनी - सोंगे किंग दो ओकोरे मेनः किंगआ?

शान्ति - हिन्हीं दादाईगअः ओड़ा रे।

रागिनी - ओकोए?

शान्ति - आमीत। अमृतपुर निः।

रागिनी - ओ, अच्छा।

शान्ति - नाः एन रेले जमा ना। आर गापा सेतः रांची। रांचीय ते दिल्ली।

रागिनी - जू माई तोबे सम्पोड़ोन में। हतोमः होड़ोः कोगे सोबेन। आलोम बोरोया।

दनंग

काड़ी - 2

लेपेल - 1

ठांव - अमृतपुर।

सोमय - सात बाजे सेतः।

आमीत, शान्ति, मालती, आर संगीता रांची रेलवे स्टेशन को तेबः जादा। दिल्ली रः गाड़ी रे सोबेन कोए दुब तुकाः कोचि आमीत दो खूंटीः रूड़ा ताना। ओड़ा बोलो तान लोः गे कुड़ि ते कुलि दरोम जःई।

रूपा - (खदरव, खींस-खींस गे लेलोः ताना) देः तुकाः कोअम?

शांति - वहीं हम दोनों बात कर रही थीं। भतीजा के साथ अपने ही दो लड़की आयी हुई हैं। उन सबों के साथ इस छुट्टी में दिल्ली घूमने जाने की बात बता रही थी।

प्रभुदयाल - अच्छा, वे तो अपने ही आदमी हैं। घूम आ ले तब तो।

रागिनी - कब जाने का है?

शांति - कल सबेरे।

रागिनी - सहेलियां कहां ठहरी हैं?

शांति - दादा के घर में।

रागिनी - कौन दादा?

शांति - अमीत। अमृतपुर का।

रागिनी - ओहो, अच्छा।

शांति - अभी हम वहां जमा होएंगे। कल सुबह रांची। और रांची से दिल्ली।

रागिनी - जाओ तब। वे फुफी के ही आदमी हैं। डरने की बात नहीं।

पटाक्षेप

कड़ी - 2

दृश्य - 1

स्थान - अमृतपुर।

समय - सात बजे सबेरे।

अमीत, शांति, मालती और संगीता रांची रेलवे स्टेशन पहुंचते हैं। दिल्ली जाने वाली गाड़ी में उन्हें बैठा कर अमीत खूंटी लौटता है। दरवाजा घुसते ही पत्नी रूपा उसे पूछती है।

रूपा - (क्रोध की मुद्रा में) इन्हें गाड़ी में चढ़ा दिया?

आमीत - हे।

रूपा - सारते-सारते काजि में। चानः कोम चिका बड़ा ताना? आईंग के नुबः रेम दो किंगा तेम कामि ताना। नेया कोदो का ठीक काजि को।

आमीत - (बुला कनाते) का ठीक कमि! नू तेयाः दो मिद पैसा काम ओमेया। आमः मुखिया गिरिंग लेल केदा। हातु रेन मुखियाम बई जाना दो लाट साहिबाम अटकरेन ताना? नेता, अभिनेता, सेठ साहुकार को लेल कोम।

रूपा - मोचा रे लगाम तोले में। मताल का रे। ओको नेता, अभिनेता को? इनकुअः लुतुअ दो उदुबेमे।

आमीत - लुतुम! लुतुम का, कामि लेलेमे- होन-बुड़ि, हागा-मिसि, सेता-पुसी कोअः लुतुम ते दिल्ली-पटना रे टाका को जामा जादा। नाकली आदिवासी बई केयाते ओते-आड़ि को रेः जाद कोवा...। घी डालडा को जोम ताना....।

रूपा - एना कोदो आम ठोरेया। उदुबेमे, एन कुडि किंग ओको तकिंग तई केना?

आमीत - अँ, जाँए कम उदुबा कोआ दो?

रूपा - (मोटाई तेः जापनः ताना) का गे।

आमीत - नेसः जापः न मे।

रूपा - (लुतुरेः जपः जदा) मार....।

आमीत - सहारा इंटरप्राइजेज दिल्ली रः संस्था चलव तान किंग।

रूपा - सहारा इंटरप्राइजेज चिकनः?

आमीत - दिल्ली शहर रे कुड़िहोन को अकिरिंग तेयाः संस्था, बुझव जनम?

अमीत - हां

रूपा - सच-सच कहो। तुम क्या सब कर रहे हो?हमको अंधेरे में रख कर काम करते हो! ये ठीक काम नहीं है।

अमीत - (नशे में धुत हुए) हं, न ठीक काम। शराब पीने के लिए तो एक पैसा नहीं देती हो। तुम्हारा मुखियागिरि को देख लिया। गांव की मुखिया बन गई तो अपने को लाट साहिब समझती हो? नेता, अभिनेता, सेठ-साहूकारों को देखो।

रूपा - मुंह में लगाम लगा के बात करो, मताल नहीं तो। कौन नेता, अभिनेता....उनका नाम तो बताओ?

अमीत - नाम! नाम नहीं। उनके काम देखो। बच्चा-कच्चा, भाई-बहिन, बिड़ाल-कुकुरों के नाम दिल्ली-पटने में रुपिया जमा करते हैं। नकली आदिवासी बन-बन कर उनके जमीन छीन रहे हैं, घी-मलाई खाते हैं....।

रूपा - वह सब तुम जानो। बताओ वो दोनों लड़कियां कौन थीं?

अमीत - अंए, किसी को नहीं बताओगी तो!

रूपा - (उसके पास सटती है) नहीं! किसी को नहीं बताऊँगी। बोलो।

अमीत - कान पास लाओ।

रूपा - अच्छा-अच्छा चलो बोलो (पास सटती है)

अमीत - सहारा इंटरप्राइजेज दिल्ली के एजेंट हैं।

रूपा - सहारा इंटरप्राइजेज क्या?

अमीत - दिल्ली शहर में लड़का-लड़की बेचने का संस्था। समझी?

रूपा - हे भोगोमन, सिंहबोंगा, सरना माता चिका किः ञम? नेया दोम गोए किः ईंग...।

आमीत - हुं, गोए जानाम। गोए जनम चिम जीद जाना। पांच फीसदि हिस्सा आमः बटुआ रे बोलो कोः रेम ठोरेया। नेया जूंग सलाम-दुआ तेला रः का, माल हम्बुड रः जूग तानः। जू सेनोः में जू...। सलाम-दुआ, नेका, जू...।

(एन रेगेः दुड़िः सुन्दई वो ताना)

दनंग

लेपेल - 2

ठांव - सहारा इंटरप्राइजेज रः कमि ओड़ाः

सोमय - अईउब सः

संगीता, मालती आर ज्योति तको दिल्ली को तेबाः जदा। निदा मंडि जोम सोमय को जपागर ताना।

ज्योति - चि संगीता अलेयाः दिल्ली शहर चिलकम आटकर केदा?

संगीता - बिर लेका। ओडाः कोते बिरा काल बिर लेका, हें.हें.हें...

मालती - नाः कोतः दिल्लीम लेल तदा? हिजुः तान रे होरा-होरा तेम लेल तदा सेगे।

ज्योति - हे रे संगीता। दिल्ली दो बोड़े मरंग शहर। मुसिंग रेदो लेल तेव का चबावगा। मन्डिम ओड़ोगा?

संगीता - का गे।

ज्योति - उतु?

संगीता - एनव कागे।

मालती - नावा कोन्या अलोम बईना। अलोम गिउःगा। लाईः पेरे जोमेमे।

रूपा - हे भगवान, सिंहबोंगा, सरना माता तूने क्या कर डाला? यह तो तुमने मुझे जीते जी मार डाला। (माथा पीटती है)

अमीत - अंए मर गई! मर गई कि जी गई! पांच प्रतिशत रूपिया तुम्हारे संदूकची में जमा होएंगे तो जानोगी। हुं, इ जुग सलाम-दुआ लेने का नहीं, माल बटोरने का है। जा..जा. तू सलाम-दुआ लेने जा...।

(वहीं गिर पड़ता है)

पटाक्षेप

दृश्य - 2

स्थान - सहारा इंटरप्राइजेज का कार्यालय।

समय - रात दस बजे।

संगीता-मालती और ज्योति दिल्ली पहुंचती हैं। रात को खाने के समय वे बात करती हैं।

ज्योति-संगीता - क्यों संगीता हम लोगों का दिल्ली शहर कैसा लगा?

संगीता - जंगल जैसा। आदमियों से, घरों से बना जंगल जैसा। हें. ...हें....हें....।

मालती - अभी कहां दिल्ली देखी हो?आने के समय जो देखी सो ही।

ज्योति - हां रे संगीता। दिल्ली तो बहुत बड़ा शहर है। एक दिन में तो खत्म नहीं होगा, देखना। भात और लोगी?

संगीता - नहीं।

ज्योति - तियोन, तरकारी?

संगीता - वह भी नहीं।

मालती - नयी दुल्हन नहीं बनना। मत शर्माओ। पेट भर के खाओ।

नेया दिकु ओड़ाः। हिसब बारि मन्डिवोः ताना हें...हे...हे..। उतु चिलका सिबिला काना?

संगीता - खूब गे सिबिला।

ज्योति - आपे खूंटी सः नेकन उतु को नामोगा चि का?

संगीता - नेका नः कोदो, का नामोगा।

मालती - चिकनः उतुआ काना, मरतो कजि लेम?

संगीता - इदो दाई काईंग जोम इरूम जादा।

ज्योति - सलुकिद बाम लेला कादा?

संगीता - हे...हे..(मेद-लुतुर को चुडुकुद जद लो) नेया दो अलेयाः बन्दा रेव मेनागा।

ज्योति - एना रः नान्डा।

मालती - एनका दंग शहर रे हिजुः कोः रेदो नावा नावा सेंणाँ को नमोवा, नावा-नावा जोम को नामोवा....।

ज्योति - मगर सेंगा को ननम रेदो खर्चाव मेनागा।

मालती - एना दोड़ो जोका कान गेया। नमिन दूर झारखण्डे याते दिल्ली सेंणा नाम लंग हिजुआ बना, एनागे ठोर लेम। ने दिसुम रे बेगर पैसा ते जेतनव का नमोगा। चि संगीता का?

संगीता - एना दो हे कजि गे तानः।

ज्योति - चिमिन लेका पैसाम आउ तोरसा कादा?

संगीता - पुरः दो बनोगा। मियद चतोम किरिगे बारि मेनः।

मालती - ए हे, तोबे दो चिलिका कामि बईबोगा?

ज्योति - मियद उपाय मेनः।

मालती - चिनः?

ज्योति - नौकरी।

यहां तो दिकु लोगों का घर है। हिसाब से खाना बनता है। तरकारी कैसी बनी है?

संगीता - बहुत स्वादिष्ट है।

ज्योति - उधर खूंटी तरफ ऐसा तियोन मिलता है कि नहीं?

संगीता - नहीं। ये सब तो उधर नहीं मिलता है।

मालती - क्या तियोन बना है बोलो तो?

संगीता - पता नहीं दीदी। खा के भी नहीं पहचान रही हूं।

ज्योति - कमल फूल देखी हो?

संगीता - हां (चौंकती है) यह तो हम लोगों के तालाब में भी है।

ज्योति - उसका डन्टल है।

मालती - ऐसा ही, शहर आने पर तो नया-नया खाने-पीने को मिलेगा। नयी-नयी गियान-बुद्धि मिलेगी।

ज्योति - मगर बुद्धि खोजने में तो खर्चा भी है।

मालती - हां। वह तो जानी हुई बात है। इतना दूर झारखंड से हम बुद्धि खोजने जो आयी हैं, वही जान लो। इस दुनिया से पैसा बेगर कुछ नहीं मिलता, क्यों संगीता ठीक कहती हूं न?

संगीता - हां, वह तो ठीक बात ही है।

ज्योति - कितना पैसा घर से लायी हो?

संगीता - ज्यादा तो नहीं लायी हूं। एक फोल्डिंग छाता खरीदने का भर है।

मालती - हं! तब कैसे काम बनेगा?

ज्योति - एक उपाय है।

मालती - क्या?

ज्योति - नौकरी।

मालती - हुं ने सोमय रे नौकरी! होसोड़ो चि होसोड़ो दे?

ज्योति - का गे। मियद साबेः काजि काजियाईंग तान नई केना। देंईंग जागार लोकाईया।

(ज्योति मोबाइल सब केयाते बाहरेः उडुँगवोः ताना)

हैल्लो, हैल्लो सार....।

कारोड़ीमल - हैल्लो..हैल्लो ओकोए?

ज्योति - ज्योति सहारा इंटरप्राइजेज ते।

कारोड़ीमल - काजि में।

ज्योति - सार, आलंगः कामि बाई जाना। माल ओड़ः रे मेनः। चिम तंग चाई?

कारोड़ीमल - गापा अईउब सः पांच बाजे।

ज्योति - ओ के सार।

(ज्योति अकिंग तःए रूड़ा ताना)

मालती - चि चनःए मेन?

ज्योति - नौकरी नाम जाना। संगीता मिठाई....।

मालती - वेतन दो चिमिनंग?

ज्योति - माहीना एक हाजार।

मालती - वाह!

ज्योति - गापा अईब सह पांच बजेयाते डयूटी साब।

मालती - तोबे दो तेयारेन में गापा सेतः ठीक सोमय देलिंग इदितुका मां।

संगीता - हे मार।

दनंग

मालती - हुं, नौकरी। इस समय नौकरी कहां मिलती है?झूठ तो नहीं बोल रही।

ज्योति - नहीं। एक साब हम को बोल रहा था। अच्छा मैं उससे बात करती हूं।

(ज्योति मोबाइल पकड़ कर बाहर निकलती है)

हैल्लो सर.... हैल्लो सर.... मैं ज्योति....।

करोड़ीमल - हां, हैल्लो...कौन?

ज्योति - ज्योति, सहारा इंटरप्राइजेज।

करोड़ीमल - अच्छा-अच्छा, कहो...।

ज्योति - सर हम दोनों का काम बन गया है। माल घर पहुंच गया। कब चाहिए?

करोड़ीमल - कल शाम को पांच बजे।

ज्योति - ठीक है सर।

(ज्योति उन दोनों के पास लौटती है)

मालती - कहो, साब क्या बोला?

ज्योति - नौकरी पक्की समझो। संगीता कल सबेरे हमें मुंह मीठा कराओ। ठीक कि न?

मालती - पगार कितना?

ज्योति - महीना में हजार रुपये।

मालती - वाह!

ज्योति - कल शाम पांच बजे से ड्यूटी पकड़ना है।

मालती - तब तो तुम तैयार हो जाओ। कल ठीक समय पर उसका घर हम दोनों पहुंचा देंगे।

संगीता - ठीक है।

पटाक्षेप

लेपेल - 3

ठांव - चाय होटल रे।

सोमय - सेतः आठ बाजे।

होटेल रे होड़ो को चाय को, मेटाई को को जोम नू ताना। मेटाई दोवा कान सनामंग रे संगीता तिंगुवा कान चि मेटाईः असि ताना। अयर नोः रेगे मियद सूट-बूट तुसिंग ताद हेदे-हेदे दोड़ो चायः नू ताना। मेटाईः किरिंग केद चि सेनोः तान रे संगीता के रः जःईया।

संगीता - नेःनेया आईंग के 10 ठो ओमाईंग में।(दुकानदार इनिः मेटाईए ओमाई ताना)

हेन्दे होड़ो - ए रे...होंति...होंति। आम दो नावा-नावा गेईंग आटकर जाद मेया। ओकोवा तेम हिजआ काना?

संगीता - (सये सये ते इनिः केः अरिद जःईया)

हेन्दे होड़ो - हां, हां, अमगेईंग कुलि ताना।

संगीता - झारखण्डेया ते।

हेन्दे होड़ो - हेनेःहेन ओड़ाः ते उडुंगवोः तनेईंग लेल लेः मां।

संगीता - हे।

हेन्देहोड़ो - एना दो का ठीक ओड़ाः।

संगीता - आम दो ओकोए?

हेन्दे होड़ो - पढ़ावा कनम?

संगीता - हे।

हेन्देहोड़ो - कोतः हबिः?

संगीता - 10 क्लास रेईंग पढाव ताना?

दृश्य - 3

स्थान - चाय होटल।

समय - सबेरे आठ बजे।

चाय होटल में खाने-पीने वालों की भीड़ जमी है। मिठाइयों के सामने खड़ी होकर संगीता मालिक से मिठाई मांगती है। जरा हटकर एक सूट-बूट धारी काला-काला आदमी चाय पीता है। संगीता मिठाई खरीद कर जाते हुए उसे पुकारता है।

संगीता - (मालिक से) इसे 10 गो दो।

दुकानदार - (मिठाई देता है)

काला आदमी - ए लड़की ठहरो...ठहरो...। तुम तो यहां नया-नया आयी लगती हो। कहां से आयी हो?

संगीता - (तिरछी नजरों से देखती हुई चलती बनती है)

काला आदमी - हां-हां तुम्हीं को बुला रहे हैं।

संगीता - झारखंड से आयी हूं।

काला आदमी - उस घर से निकलते हुए देखा था।

संगीता - हां

काला आदमी - वह घर ठीक नहीं है।

संगीता - तुम कौन हो?

काला आदमी - पढ़ी-लिखी हो?

संगीता - हां।

काला आदमी - कहां तक?

संगीता - 10 क्लास में पढ़ती हूं।

हेन्दे होड़ो - तोबे दो नेतःम हिजुआ काना?

संगीता - हे। आईयः होड़ो कोलोः छुट्टी रे दिल्ली शहर लेल।

हेन्दे होड़ो - अच्छा। एना ओड़ाः दो होड़ो को अकिरिंग तान ओड़ाः। 'ह्यूमन राईट लॉ रेन साब आईंग दो, वेंकटेश्वर पिल्लई।

संगीता - (हपे हपे गे मेटाईः इदि केदा)

दनंग

लेपेल - 4

ठांव - सहारा इंटरप्राइजेज ओड़ाः

सोमय - साढ़े आठ बाजे सिंगि।

संगीता मेटाई आउ लेद चि ओड़ाः रेन सोबेन होड़ो कोए हाटिंग जः कोआ। तन्दा-लपन्दा तन लोः को जापागर ताना।

संगीता - ने दाई....कुरिः दीदी दो...ने..

ज्योति - हाय रे बाला, मेटाईम आउतदा! आईंग दो लान्दा लान्दा दंगईंग जगर लः हें...हें..हें..। नेका गे जानाव दिन जोम नमोः का हें... हें...हें...हें...(मोचा रे मेटाई लगव जद लोः)

मालती - हुं, आमः नागेन जानाव नामोआ का? जानाव दादा दाई ताको नुकुरीम नामा कोआ तोबे दो जोम नामोबा, हा...हा... हा...हा...।

ज्योति - संगीताः ओडोः सोंगे कोबु रः कोवा। काचि संगीता?

संगीता - हे, हे, हे, दाई मर। (दिगद दिगद गेः जगर जादा)

मालती - हुं, चिका जनम?नुकुरी काचि बेस जद में?

ज्योति - नावा कनाः ते का सुकु जःईया। अच्छा दु महीना लेका नुकुरी कोः में। 2000 टाका रेदो इसुम लेलेया। एना ते

काला आदमी - तब यहां किसलिए आयी हो?

संगीता - मैं अपने लोगों के साथ दिल्ली शहर देखने आयी हूं।

काला आदमी - अच्छा! वह घर तो लड़की सब को खरीद-बिक्री करने वाला घर है। 'ह्यूमन राईट लॉ' का साहब हूं। मेरा नाम वेंकट पिल्लई है।

संगीता - (चुपचाप मिठाई लेकर चली जाती है)

पटाक्षेप

दृश्य - 4

स्थान - सहारा इंटरप्राइजेज का कार्यालय।

समय - साढ़े आठ बजे दिन।

संगीता मिठाई ला कर सबको बांटती है। हंसी-हंसी में सब बातचीत करते हैं।

संगीता - लो दीदी...कहां मालती दीदी...।

ज्योति - अरी मिठाई ला ही दी। मैं तो तुमसे मजाक कर रही थी। ऐसा ही रोज खाने को मिले हं...हं....हं...हं.. (मुंह में मिठाई डालते हुए)

मालती - हुं, तुम्हारे लिए ही रोज खाने को मिलेगा। रोज तुम्हारे भाई-बहनों को इस तरह नौकरी खोज दोगी तब न खाने को मिठाई मिलेगा, क्यों?

ज्योति - संगीता के दोस्त सब को बुलायेगी। क्यों संगीता ठीक है?

संगीता - हां, हां दीदी बुलाऊंगी (रूक-रूक कर बात करती है)

मालती - अरे क्या हो गया। बात नहीं करती है?क्या नौकरी अच्छा नहीं लगता?

ज्योति - नयी-नयी आयी है, इसलिए अच्छा नहीं लग रहा होगा। अच्छा दो महीना जैसा नौकरी कर लो। दो हजार रुपये में तो

दिसुम लंग रूड़ाः । चि चिलका?

संगीता - हे मार ।

दनंग

लेपेल - 5

ठांव - कारोड़ीमलः ओड़ाः ।

सोमय - आईउबसः पांच बाजे ।

ज्योति आर मालती संगीता के करोड़ीमलः ओड़ाः किंग इदि जः ईया । इनियाः हाल-पता किंग उंदुबई ताना । ओड़ोः आको-आको बारि रः गुपुती जगर को जगह ताना ।

कारोड़ीमल - हां, देला, देला । हिजुः पे । चानः लुतुम माई आमागाः दो?

ज्योति - हां, मारगे आमागाः लुतुम उदुबई में ।

संगीता - संगीता ।

ज्योति - उँ, हुँ, संगीता बारि दो का । सर, संगीता मेन्ते काजि में । नि दो आमाः साब तानिः हेई ।

कारोड़ीमल - जेतन काजि बनोः । लुतुम दो खूब बुगीनेम लुतुमा काना । अच्छा तिसिंगआ तेगे अमाः डयूटी एटेः जाना ।

ज्योति - सार, नि चानः चानः ए कमिया पेया?

कारोड़ीमल - कामि! चानः कामि, हेन चाय बई, चिपा-गासार राचा जोः लिजाः किचिर सफा, नेकानाः कोगे ओड़ोःचनाः?

मालती - तोबे दो साबः ओड़ाः रे ठीक लेका तईनोः में । टाका-पैसा सोना-गहना कोरे ती आलोम जिलिंगया, हेई ।

राधा - अच्छा अच्छा, जेतन काजि का । झारखण्ड रेन कुड़िहोन को ती

बहुत देख लोगी। उसके बाद तुमको खूंटी पहुंचा दूंगी। क्यों?

संगीता - ठीक है।

पटाक्षेप

दृश्य - 5

स्थान - करोड़ीमल का मकान।

समय - शाम पांच बजे।

ज्योति और मालती दोनों मिलकर संगीता को करोड़ीमल का घर ले जाती हैं। और उसके घर-द्वार, रहन-सहन के विषय में बताती जाती हैं। फिर अपने में भी करोड़ीमल के बीच गुप्त वार्ता होती है।

करोड़ीमल - हां, हां आओ। क्या नाम है तुम्हारा?

ज्योति - हां चलो तुम्हारा नाम साहब को बता दो।

संगीता - संगीता।

ज्योति - उं हूं, केवल संगीता नहीं। सर, संगीता कहो। ये तो तुम्हारा मालिक साहब रहे।

करोड़ीमल - कोई बात नहीं। नाम तो बहुत बढ़िया है। अच्छा, आज से ही तुम्हारी ड्यूटी शुरू हो गयी है।

ज्योति - सर, यह क्या-क्या काम करेगी?

करोड़ीमल - काम क्या है?चाय-वाय बनाना, बर्तन मांजना, कपड़े धोना, बाजार वगैरह करना, यही तो काम है।

मालती - तो अब साहब का घर में ठीक से रहो। रुपिया-पैसा, सोना-गहनों पर हाथ नहीं बढ़ाना, समझी।

राधा - अच्छा-अच्छा। कोई बात नहीं। झारखंड की लड़कियां

जिलिंग को ककों इतुअना। नेया अमाः ओड़ाः लेका गे भानातिंग में। जू अबेन रूड़ा बेन।

ज्योति - सार!

कारोड़ीमल - हुँ ओ हे...हे..। दोला आईयः कोठरी ते।

(इनकिंग कोठरी तेकिंग सेनोः ताना)

संगीता - (संगीता बाहर सः रे अतेन ताना)

कारोड़ीमल - (टकाए लेका ताना) वन टू, थ्री, फोर...चिमिनंग रे कजिओद लेना?

ज्योति - 11 हाजार।

कारोड़ीमल - ने!

(टाका सब केयाते ज्योति आर मालती किंग उड़ूँवोः ताना)

संगीता - (लुतुर चुडुकुदोः ताना। जी-जी रेगेः काजि जादा) हां, नः च नकन चोलोन! होटल रे एन होड़ो ठीक गेः काजि लः। नः दो निकुअः काजि-कामि कोईंग बुझव चाबा जाना...। आजो सोमय तेबः कोः का...।

दनंग

लेपेल - 6

ठांव - सिदा तः रेगे।

सोमय - निदा मन्डि जोम सोमय।

राधा संगीता के सिंगि रः सरेः मन्डि कोए ओमई ताना। संगीता जुजुन्टुगोः लेलोः ताना। होड़ोमो रे बेस किचिरिव बानो। ब्लौज केचः गेया। मयंग रेव जॉ-लेकन साड़ीः तुसिंग तादा। नेका गे चिमिन दिनाते सेसेनाउ ताना। संगीता नेरे ताईन आसादी चबाव

चोरी-चमारी नहीं करती हैं। ऐसा मैंने सुना है। हां तो संगीता यह तुम्हारा ही घर समझो। जाओ तब तुम दोनों लौट जाओ।

ज्योति - सर।

करोड़ीमल - अह...हां...हां। चलो अन्दर।

(वह सब अंदर जाते हैं। संगीता वहीं बैठी है)

करोड़ीमल - (रुपये गिनता है) वन, टू, थ्री, फोर...कितना में तय हुआ था, कहो तो?

ज्योति - सर 11 हजार में।

करोड़ीमल - अच्छा लो (उसे 11 हजार रुपये देता है और दोनों बाहर निकलती हैं।)

संगीता - (चौंकन्ना होकर मन ही मन कहती है) अच्छा-अच्छा यह चाल! होटल का वो काला आदमी ठीक ही मुझे कहा था..। अब इन लोगों का सारा खेल समझ गई। अब समय आने दो...।

पटाक्षेप

दृश्य - 6

स्थान - पूर्ववत।

समय - रात को।

राधा दिन का बचा खाना को ही संगीता को देती है। संगीता का पहिनावा भी भिखमंगा जैसा दिखता है। फटा, मैला कुचैला ब्लौज पहनी है। इसी तरह बहुत दिन से रहते आ रही

तान लेकाए आटकरोः ताना।

राधा - (खचरागे) ने गे मन्डि।

संगीता - (मन्डि लेलजद लोः गे कए तेला ताना) का मालकिन का रेगेः जईया।

राधा - हुँ, अलो रेदो अलोमः। नाः बारह बजावा काना। जोम जटा थाड़ी को काम गासरा कादा। एक बजावोः चा दू बजावोः। हेना को सोकेन गासर केयाते गितिः में। बुझव तानाम।

संगीता - हे। मागार.....।

राधा - आगार-मागार चानाः?

संगीता - जानाव निदा दो सिंगिर रः सारेः मन्डि कोगेम ओमाईया। नेः तईंग होड़ोमोरः लिजः को केचः चाबा जाना....।

राधा - हे, नाः दो नेरे जोम-जोम तेम बुबुकाव जाना, का? आमः ओड़ाः रे दो नेया को काम बोसा लेना। जोम रेदो जोमेमे। का रेदो अलोमः। हुँ कामिड़िम बाईकाना।

संगीता - (ओड़ोए तेला रूड़ा जदा। आर मेद दः जोरो तान लोः मन्डिः जोम ताना)

कारोड़ीमल - ऑए! चानः कोबेन ककला जादा?

राधा - आमः झारखण्ड रेन रानी नाः दो तुतुकुन को काए जोजोमा। केचः लिजः को कए तूसिंगआ...।

कारोड़ीमल - अँ...केचः लिज...। मन्डि जोम केयाते आईंतः कुल ताई में। आईंग लोः लिंग उईयु संगि ना हा...हा...हा...।

संगीता - (नेया जगारेः आईउम केद लोः गे थाड़ीः हुरंग गिड़ि जादा। आर मन्डि ओड़ाः तेः दाउड़ी इदि जादा)

दनंग

है। वह यहां रहते-रहते तंग आ चुकी है।

राधा - (क्रोध से) लो भात।

संगीता - (देखते ही उसे नहीं लेने का मन बनाती है) नहीं मालकिन आज भूख नहीं लग रही है।

राधा - हुं, नहीं खाना है तो मत खाओ। मेरा क्या जाता है? अभी रात के बारह बजे हैं। जूठन बर्तन भी नहीं धोई है। एक बजे या दो बजे। वो सब धो धा के सोना। समझी?

संगीता - ठीक है। मगर...

राधा - अगर-मगर क्या रे?

संगीता - रोज रात को तो बचा बासी भात ही खाने को देती हैं। ये देखिए लाज ढंकने को बदन पर कपड़ा भी नहीं है। ऐसा में कैसे चलेगा, मालकिन?

राधा - ऐसा ही चलेगा। तुम्हारे देश में कैसे चलता था?अभी यहां खा-खा के अघा रही हो तो! तुम्हारे घर में यह सब भी नसीब में न था। खाना है तो खाओ। नहीं तो मरो। नौकरानी बनी है।

संगीता - (फिर थाली लेती है और आंसू पोंछते हुए खाने लगती है)

करोड़ीमल - आंए! क्या सब हल्ला मचाती रहती है?

राधा - तुम्हारे झारखण्ड की रानी अब ठण्डा भात नहीं खाएगी। फटा-पुराना कपड़ा नहीं पहनेगी...।

करोड़ीमल - फटा पुराना कपड़ा...। खाने के बाद मेरे यहां भेज दो। हम साथ-साथ सोएंगे। रजाई से ओढ़ेंगे हा..हा..हा।

संगीता - (इस बात को सुनते ही थाली को फेंक देती है और रसोई में दौड़ आती है)

पटाक्षेप

लेपेल - 7

ठांव - मन्डि ओड़ाः।

सोमय - निदा साढ़े बारह बाजे।

खींस ते संगीता मन्डि ओड़ाः तेः निर बोलो ताना आर अड़ाः हद छूरी सब केया ते आयाः लाईः रे सोबोः एतेलेन ताना। (एन सोमय रे राधाए बोलो ताना)

राधा - है, कोडिया मारा का रेदो। कामि लन्डिया ते गोएनेम मोने तादा! आमः मांः ओड़ाः गेम बई तादा का? अले के जेलेम सेनोः रिका लेया चि चिलका? दोला अमः साब रः जःमा। आम लेका गे को लन्डियाः का? गोटा सिंगि कामि कामि तेः लगाउवा काना। बुलु को ओंता बाड़ा नोः ताई में।

(संगीता केः सोलका इदि, तिः इदि जःईया)

दनंग

लेपेल - 8

ठांव - कारोड़ीमल गितिः कोठरी।

सोमय - निदा एक बाजे।

लेगेन-लेगेन पलंका रे कारोड़ीमल लुंगी बारि तुसिंग केयातेः गितिया काना। आर रजाई ते उइयु पोटोमा काना। राधा संगीता के कोठरी तेः तिः अंदर तुकाई चि दुअरेः हंडेद जादा। आर बाहर सः रे दुअर रेः जापागा कान चि मुरगुई-मुरगुई लन्दा तान लोःए अरिद जपिद जादा।

दृश्य - 7

स्थान - रसोई घर।

समय - रात साढ़े बारह बजे।

क्रोध के मारे संगीता रसोई घर में दौड़े आती है। और सब्जी काटने वाली चाकू से पेट में खुद को भोंपने लगती है। इसी समय राधा भी पहुंचती है। दोनों में बक-झक होता है।

राधा - हें, आलसी कहीं की। काम के डर से मरने आयी है तू? यह तुम्हारी मां का घर बना रखी है क्या? हमें जेल भेजोगी क्या? चलो तुम्हारा साब बुलाता है। तुम्हारे जैसा ही वो आलसी नहीं, सारा दिन काम करके आते हैं। वो थक गये हैं। थोड़ा हाथ-पैर दबा आओ।

(वह संगीता को धक्का देकर उसकी कोठरी में ले जाती है)

पटाक्षेप

दृश्य - 8

स्थान - शयनकक्ष।

समय - रात एक बजे।

आरामदेह गद्दा के ऊपर करोड़ीमल केवल लुंगी के सहारे सोया है। रजाई से ओढ़ा हुआ है। राधा संगीता को धक्का देकर अंदर करती है और खुद दरवाजा बंद कर पास ही खड़ी हुई है। वह मुस्कुरा-मुस्कुरा कर आंखें बंद करती खोलती भी है।

कारोड़ीमल - अँ, ऊँ हाय। संगीता रानी गोटा सिंगि कमि-कमि ते होड़ोमो ओद गिड़ियो ताना। मोचो कोए कटा- ती को चिपुद बेड़ा तईग में तलंग।

(बिरिद जन चि इनिः केः तिः आगु जःईया। आर पलंका रेः दुब जःईया)

संगीता - (रः तान लोः गे कटा चोम्पा कोए ओता जःईया)

कारोड़ीमल - बतिरि चेतन नोः को। मार मार जुंका जिलु तः को...।

संगीता - (जुंका जिलु तः कोए ओता जःईया)

कारोड़ीमल - हां, हां। मार ओड़ोः गे चेतन...बुलु तः को...मार...।

संगीता - (एन लोःदो, का मोन जःई रेवो, जीः केटेः केदा। आर बुलु कोए ओता बेड़ा जःईया। करोड़ीमल इनिः केः हम्बुद जः ईया)

राधा - (चुडुर-चुडुदेः कोएवोः जः किंग चि मुरगुई मुरगुईः लान्दा ताना)

दनंग

लेपेल - 9

ठांव - सिदा तः रेगे।

सोमय - हुड़िग खोन तयोग ते।

हुड़िग खोन होबा जान चि राधा असादि जःई लेकाए लेलोः ताना। नेते-हेन्ते जापः रेगेः बिउर बेड़न ताना। एन लोः दो खींस ते दुआरः फादा जादा। दुआर फंग केन निः जाना। आर संगीता केः खचरा जःईया।

राधा - मुरकाट, जलमरनी। अईया मोचा रः जिलु रेःम हिजुआ काना? जू नाः गे उडुंगवो में। करारेईंग फदा उडुंग जः मां।

करोड़ीमल - अं, अउं हाय। संगीता रानी। दिन भर काम कर-कर के थक गया हूं। थोड़ा हाथ-पैर दबा देना।

(उठता है और उसे पलंग पर बिठाता है)

संगीता - (रोते हुए पांव की उंगलियों को दबाती है)

करोड़ीमल - हां हां। और थोड़ा ऊपर, ठेहुंना सब...।

संगीता - (ठेहुना को दबाती है)

करोड़ीमल - हां। चलो थोड़ा और ऊपर...जंघा तक...।

संगीता - (जांघों को दबाने लगती है न चाहते हुए भी, तब करोड़ीमल उसे दबोच लेता है।)

राधा - (पुलकित मन से दोनों को झांकती है और मुस्कुराती है)

पटाक्षेप

दृश्य - 9

स्थान - पूर्ववत

समय - कुछ समय बाद।

कुछ समय बाद राधा दरवाजा को लात मारती है। दरवाजा खुल जाता है। आपत्तिजनक स्थिति में देखकर संगीता को डांट पिलाती है।

राधा - मुरकाट, जलमरनी। मेरे मुंह का कौर छीनने आयी हो। अभी घर से निकल जाओ। नहीं तो लात मार कर बाहर कर दूंगी, हां।

संगीता - (एन लोः गेः उडुंगवोः ताना)

राधा - हाय गतिंग (पलंका रेः गितिः तान लोः) ओड़ोः मिसा रामलीला लंग रचव लेया...।

कारोड़ीमल - (जेतन गतागोम गे बनोः)

राधा - (अय सः ए पल्टिन ताना) दे, जेतनः व काम मेनेया?

कारोड़ीमल - अं हँ, हाँ, गतिंग। मेन्दो...।

राधा - हाँ, मेन्दो?...

कारोड़ीमल - रसिका रः रासेगे चाबा जाना, गातिंग।

राधा - धत् मुरकाट संगीता! गापा तेदो आईगे सिदा रासे नूईया। हुँ, नचिनी, खेलडी का रे।

(देया सः तेः पल्टिन तना। आर रजाई तेः उईयु पोटोमेन ताना)

दनंग

काड़ी 3

लेपेल - 1

ठांव - ओड़ाः रे

सोमय - सेतः आठ बाजे।

सेतः आठ बजे संगीता कारोड़ीमल पढ़व कोठरीः जोः ताना। साब दो नाते, कुड़िते लोः किंग जापागार ताना। टेबुल रेगे मोबाईल दोवा कना। एन लोः गे मोबाईल सब केद चि आयाः आबा केः फोंन जःईया।

संगीता - हल्लो, हल्लो, आबा आबा....आईंग संगीता। दिल्लीया तेईया फोन जादा।

संगीता - (तुरंत बाहर निकल जाती है)

राधा - (पलंग पर लेटते हुए) हाय प्रिय और एक बार रासलीला रचा लेंगे। आओ।

करोड़ीमल - (कोई संज्ञान नहीं)

राधा - (उसके तरफ पलटती है) क्यों नाथ कुछ भी नहीं बोलते?

करोड़ीमल - अं हां...हां..। प्रिये। लेकिन...

राधा - हां, लेकिन....?

करोड़ीमल - रासलीला रचाने का रस ही सूख गया, प्रिये।

राधा - धत्। मुरकाट संगीता! कल से मैं ही पहले रस पीऊंगी। नचिनी, खेलडी नहीं तो।

(पीठ के बल पलटती है और रजाई से खुद को ढंक लेती है)

पटाक्षेप

कड़ी - 3

दृश्य - 1

स्थान - घर में।

समय - सबेरे आठ बजे।

सबेरे-सबेरे संगीता करोड़ीमल का कोठरी झाड़ू से साफ करती है। इधर, करोड़ीमल पत्नी के साथ बातचीत करता है। टेबुल पर मोबाइल फोन पड़ा हुआ है। मौका पाते ही संगीता पिता से बात करने लगती है।

संगीता - हैल्लो पिताजी...हल्लो...मैं संगीता दिल्ली से बोल रही हूं. ..हैल्लो...

प्रभुदयाल - ओकोए जागार जादा? हल्लो...हल्लो...?

संगीता - संगीता दिल्लीयाते।

प्रभुदयाल - हाँ, हाँ दिल्लीयाते।

संगीता - आबा आबा...सेकेड़ा...सेकेड़ा...अकिरिंग किःईंग को...। सेकेड़ा हिजुः में।

प्रभुदयाल - हां चनः? अकिरिंग जनम?

संगीता - हे। 11 हाजार ते।

प्रभुदयाल - ओकोए तः?

संगीता - कारोड़ीमल मित्तल गजियाबाद, दिल्ली।

दनंग

लेपेल - 2

ठांव- प्रभुदयाल ओड़ाः रे।

सोमय - सेतः आठ बाजे।

अकावकाव तान लोः प्रभुदयाल कुड़ि ते रागिनी केः कजियाई ताना।

प्रभुदयाल - का ठीक जान काजि।

रागिनी - चानः चिका जाना?

प्रभुदयाल - होन तालंग...(ओतेः तिरूब...)

रागिनी - होन तलंग चिका जाना?

प्रभुदयाल - अकिरिंग जानाए।

रागिनी - ओकोरे?

प्रभुदयाल - ज्योति आर मालती कुड़ितकिंग।

रागिनी - ओह! ठीक गेको कजिया-मेड़ेद, मेड़ेद गे हदेया। चिमिन टाका

प्रभुदयाल - हैल्लो कौन? हैल्लो..।

संगीता - हैल्लो आबा मैं संगीता दिल्ली से...जल्दी में।

प्रभुदयाल - हां कहो बेटी, कैसी हो?

संगीता - जल्दी पिताजी जल्दी। मैं बिक्री कर दी गई हूं। जल्दी आओ....।

प्रभुदयाल - क्या? बिक गई?

संगीता - हां, जल्दी आओ।

प्रभुदयाल - किसके यहां?

संगीता - करोड़ीमल मित्तल, गाजियाबाद दिल्ली के हाथों।

पटाक्षेप

दृश्य - 2

स्थान - प्रभुदयाल का घर

समय- सबेरे।

तनाव अवस्था में प्रभुदयाल पत्नी रागिनी को कुछ कहता है

प्रभुदयाल - सब गड़बड़ हो गया।

रागिनी - क्या हो गया?

प्रभुदयाल - बेटी...।

रागिनी - हां, बेटी को क्या हो गया?

प्रभुदयाल - बिक गई।

रागिनी - कहां?

प्रभुदयाल - दिल्ली में। ज्योति और मालती....।

रागिनी - ओहो! ठीक ही कहा गया है कि लोहा- लोहा को ही

नागेन ने शैतान कुड़िकिंग नेया कामि किंग कामि केदा?

प्रभुदयाल - 11 हाजार ते। गजियाबाद दिल्ली रे। गापा आईंग दिल्लींग सेनोः ताना।

रागिनी - जाँए देंगा को नाम कोम।

प्रभुदयाल - मानव अधिकार संगठन आर पुलिस कोगे। ओड़ोः ओकोए देंगा निः मेनःईया?

रागिनी - हेजू। फोटो मियद लेका इदिजम।

प्रभुदयाल - हे। ठीकीम काजि।

दनंग

लेपेल - 3

ठांव - दिल्ली शहर

सोमय - 2 बाजे सिंगि।

प्रभुदयाल थाना रेः सेना काना। दरोगा कोलोए जागार ताना।

प्रभुदयाल - सार, अईयाः होन संगीता दिल्ली शहर लेलेः हिजुः लेना। आर को अकिरिंग किःया। मोचो कोए अपे सः ते देंगा...।

लाटपाट सिंह - आँए। होन अकिरिंग जाना। आमः होन गाजर-मुराई चि चिलका? हँ...। (टेबुल रे काटाए राकाब तादा। नीकिंग देया सः रे जापः रेगे सिपईतिगुआ काना।)

खाटपाट सिंह - ओकोआ तेम हिजुआ काना?

प्रभुदयाल - झारखण्डेया ते।

काटता है। कितने पैसे के लिए ये शैतान लड़कियां यह दुष्कर्म कर बैठी?

प्रभुदयाल - 11 हजार में। गाजियाबाद दिल्ली में। कल मैं दिल्ली जा रहा हूं।

रागिनी - कोई सहायता करने वाला के साथ जाओ।

प्रभुदयाल - मानव अधिकार संगठन और पुलिस ही तो, और कौन सहायता करेगा?

रागिनी - हां, हां, जाओ। साथ में बेटी का फोटो भी ले जाओ।

प्रभुदयाल - हां, ठीक कहती हो। लाओ।

पटाक्षेप

दृश्य - 3

स्थान - दिल्ली शहर।

समय - 2 बजे दिन।

प्रभुदयाल थाना में जाता है। दारोगा के साथ बात करता है।

प्रभुदयाल - सर, मेरी बेटी संगीता दिल्ली शहर आयी थी और बिक गयी है। उसको खोजने में आप लोगों की मदद चाहता हूं।

लटपट सिंह - आंए! बेटी बिक गयी! तुम्हारी बेटी कोई गाजर-मूली है का?(टेबुल पर पांव उठाए हुए है)

खटपट सिंह - कहां से आये हो?

प्रभुदयाल - झारखंड से।

बारन किंग - हाँ...हाँ...हाँ..झारखण्डेया ते? हा...हा...हा.. झारखण्ड रेन कुड़ि कोदो नेरे आड़ा-साकाम लेका को किरिंग-अकिरिंग वोः ताना हा. .हा...हा...इलिम आउ तादा?

खाटपाट सिंह - हुजूर!

लाटपाट सिंह - लुतुर रे, बोएवो।

खाटपाट सिंह - झारखड रः इलि...।

लाटपाट सिंह - बोएवो।

खाटपाट सिंह - हाँ हुजूर।

लाटपाट सिंह - काजि अलोम तँड़ाया। रोजनामचा....।

खटपट सिंह - हाँ, हाँ हुजूर... परभु दयाल!

प्रभुदयाल - हाँ सार।

खाटपाट सिंह - कठपुतली कोम लेलजः कोआ? (उपुनिया ती डंड़ोए दोन्दोआई ताना)। बीवी, गुलाम, राजा आर...हें.हे..हे..।

प्रभुदयाल - सार कइंर्ग बुझाव ताना।

खाटपाट - बीवी, गुलाम, राजा, लाटपाट आर खाटपाट, पांच हे...हे...हे..हे. .हे।

प्रभुदयाल - पांच सौ।

खाटपाट - ...आर आमः होने नाम जाना मेनेमे...हा...हा...हा...। चि चिलका हुजूर (लाटपाट सः ए हेता ताना)

लाटपाट - बोएवो।

खाटपाट - हुजूर।

लाटपाट - काजि अलोम तँड़ाया। रोजनामचा।

खाटपाट - नाःईंग आउ जादा।

समवेत स्वर में - हां...हा...हा... झारखंड से?हा...हा...हा.. झारखण्ड के बेटा-बेटी तो यहां साग-सब्जी की तरह खरीद-बिक्री होते हैं। इसमें कोनों बड़ी बात नईखे बा। हा...हा...हा...। हड़िया लाये हो।

खटपट सिंह - हुजूर!

लटपट सिंह - कान के पास आओ, बच्चे।

खटपट सिंह - झारखण्ड का हड़िया।

लटपट सिंह - बच्चा!

खटपट सिंह - हां हुजूर।

लटपट सिंह - बात नहीं बिगाड़ो। डायरी....

खटपट सिंह - हाँ, हाँ हुजूर। परभु दयाल।

प्रभुदयाल - हां, सर।

खटपट सिंह - (हाथ की पांचों ऊंगली उठाता है) कठपुतली को देख रहे हो?बीवी, गुलाम, राजा, और हें...हें...हे..।

प्रभुदयाल - सर नहीं समझ में आता है।

खटपट सिंह - बीवी, गुलाम, राजा, लटपट और खटपट पांच हे..हे..।

प्रभुदयाल - पांच सौ।

खटपट सिंह - और तुम्हारी बेटी मिल गयी समझो।

लटपट - बच्चा।

खटपट - हुजूर।

लटपट - बात नहीं बिगाड़ो। डायरी...।

खटपट - अभी लाया हुजूर।

लाटपाट - मि. वेंकटेश्वर पिल्लईयाः नम्बर।

खाटपाट - हुजूर...।

लाटपाट - (मोबाइल रे) हालो...हालो...हालो...।

वेंकटेश्वर - हल्लो...हल्लो...हल्लो, सर। ओकोए?

लाटपाट - दरोगा, पहाड़ीगंज दिल्ली। लाटपाट सिंह।

वेंकटेश्वर - हां...हां..हल्लो सार...सार।

लाटपाट - अमलो विशेष जागार मेनः। हिजु में।

वेंकटेश्वर - ओके सार। ना गेईंग तेब जादा।

दनंग

लेपेल - 4

ठांव - दरोगा ओड़ाः।

सोमय - सिंगि, 12 बाजे।

दरोगाः ओड़ाः रे, दरोगा, पिल्लई, सिपई आर प्रभुदयाल को दुबा कान चि को जागार ताना।

लाटपाट - नि झारखण्डेयात प्रभुदयाल। नियाः कानाजि नेया चि नियाः कुड़ि होन दिल्ली रेको अकिरिंग किया। नि अबु तः ते देंगाए आसे ताना। आम दो होड़ो कोआः दुकु-सुकु को लेल तनिः। ने विषय रे चनम मेन जादा?

वेंकटेश्वर - प्रभुदयाल, आमः होनः लुतुम चानः?

प्रभुदयाल - सार, संगीता।

वेंकटेश्वर - संगीता! (चाय होटल रेन कुड़ि होनेः उडुः नाम जःईया) आदिवासी!

लटपट - मि. वेंकटेश्वर पिल्लई का नम्बर बोलो।

खटपट - हुजूर लीजिए।

लटपट - (मोबाइल पर) हालो...हालो...हालो...

वेंकटेश्वर - हैल्लो...हैल्लो..। कौन?

लटपट - दारोगा पहाड़ीगंज, दिल्ली, लटपट सिंह।

वेंकटेश्वर - हां, हां हैल्लो सर....।

लटपट -आप के साथ विशेष बात है। आप आयें।

वेंकटेश्वर - ओके सर। अभी आता हूं।

पटाक्षेप

दृश्य - 4

स्थान - दारोगा का घर।

समय - 12 बजे दिन।

दारोगा के घर में दारोगा, वेंकट पिल्लई, सिपाही और प्रभुदयाल बैठ कर बातें करते हैं।

लटपट - यह है झारखंड से प्रभुदयाल। इसका कहना है कि इसकी बेटी संगीता दिल्ली आयी थी। और यहां आ कर वो बिक गई है। इसे पता करने के लिए यह हमसे मदद मांगता है। इस संबंध में आप का क्या कहना है?

वेंकटेश्वर - प्रभुदयाल, तुम्हारी बेटी का नाम क्या है?

प्रभुदयाल - सर, संगीता।

वेंकटेश्वर - संगीता! (वह चाय होटल वाली लड़की का स्मरण करता है) आदिवासी?

प्रभुदयाल - जी सार।

वेंकटेश्वर - चिम तंग नोः ए आदा काना?

प्रभुदयाल - ने हाल रेंगे, सार।

वेंकटेश्वर - ओकोए उदुबा माँ?

प्रभुदयाल - होन गे फोन लः।

वेंकटेश्वर - एना नम्बर?

खाटपाट - हुजूर, हुजूर आईंगयो एना गेईंग जागार जः में ताईकेना।

लाटपाट - बोएवो!

खाटपाट - हाँ, हुजूर।

लाटपाट - काजि अलोम लँड़ाया। लाईः तुतुकुनोः ताना।

खाटपाट - हाँ हुजूर....बाकुआ...आ...आ...आ...आ...।

बाकुआ - जी मालिक।

खाटपाट - (ती दोन्दो केया ते उपुनिया चाय आगु रः ए उदुबाई ताना।)

प्रभुदयाल - हँ सार नेः (नम्बरेः ओमई ताना)

वेंकटेश्वर - (नम्बरेः मिलव केद चि) हल्लो...हल्लो...हल्लो....।

कारोड़ीमल - हल्लो ओकोए जागार जादा?

वेंकटेश्वर - वी पिल्लई अध्यक्ष ह्यूमन राईट लॉ दिल्ली।

कारोड़ीमल - अहा दोस्त! जगारोः का।

वेंकटेश्वर - नेकागे, बेस-बेकार रः जागार कोंगे।

कारोड़ीमल - अच्छा, सेकेड़ा रे मेनःईगया काजि में।

वेंकटेश्वर - आम तंग रः जागार दो?

कारोड़ीमल - ओकोआ?

वेंकटेश्वर - दासी-कमिड़ि कोरः।

प्रभुदयाल - जी सर।

वेंकटेश्वर - कब बिकी है?

प्रभुदयाल - इसी हाल में ही सर।

वेंकटेश्वर - कैसे पता चला?

प्रभुदयाल - बेटी ही फोन में बतायी थी।

वेंकटेश्वर - वो नम्बर है?

खटपट - हुजूर हुजूर, हम भी वही बात बताना चाहते थे....।

लटपट - बच्चा!

खटपट - हुजूर।

लटपट - बात मत बिगाड़ो। पेट ठण्डा हो रहा है।

खटपट - हां हुजूर। बकुआ....आ....आ...।

बकुआ - जी मालिक।

खटपट - (चार ऊंगलियां उठाता है) चार चाय।

प्रभुदयाल - हां सर! यह है (नम्बर देता है)

वेंकटेश्वर - (नम्बर मिला कर) हल्लो...हल्लो...हल्लो...।

करोड़ीमल - हल्लो कौन बोल रहा है?

वेंकटेश्वर - वी पिल्लई, प्रेसीडेंट ह्यूमन राईट लॉ, दिल्ली।

करोड़ीमल - अहा दोस्त! कहो क्या सेवा करूं?

वेंकटेश्वर - ऐसे ही बेस बेकार की बात के लिए ही।

करोड़ीमल - अच्छा, जल्दी में हूं। कहा जाए।

वेंकटेश्वर - तब की बात का क्या हुआ?

करोड़ीमल - कौन सी?

वेंकटेश्वर - नौकर-नौकरानियों की।

कारोड़ीमल - आ हा हा, पुरः दिन रः कानाजि।

वेंकटेश्वर - मेन्दो सदव दो नवा इदिवो ताना। जान उपाय?

कारोड़ीमल - उपाया मलंग। संगीता ...आ...आ...आ....।

संगीता - जी साब।

कारोड़ीमल - ने फोन। मियद साब अमलेकन कोए नाम ताना।

संगीता - हल्लो सार।

वेंकटेश्वर - वी पिल्लई ह्यूमन राईट लॉ, दिल्ली।

संगीता - (चईतरेन तान लो, जी जी रेगे, हेन्दे होड़ो...होटेल वाला) जी जी... जी सार।

वेंकटेश्वर - संगीता अईंगवो अमलेकन कमिया दंगिड़ि मियद चाई। आमः होड़ो के कजियाई में।

संगीता - जी जी सार....। नम्बर ओले में।

वेंकटेश्वर - हाँ काजि में।

संगीता - 095623 ....।

वेंकटेश्वर - आच्छा, साब के...। हाँ हल्लो मित्तल जी ओके। प्रभुदयाल!

प्रभुदयाल - जी सार।

वेंकटेश्वर - आमः होन नाम जाना। गापा हिजुः में। पाता आर फोन नं. बगेतुका में।

प्रभुदयाल - हे मार।

(प्रभुदयाल पिल्लई के पता आर फोन नं. कोए बगे तुकाई ताना।)

दनंग

करोड़ीमल - अहा! बहुत दिन की बात है।

वेंकटेश्वर - लेकिन तकलीफ तो नया होती जाती है। कोई उपाय सुझाओ।

करोड़ीमल - उपाय सुझाव करेंगे। संगीता...आ...आ...आ...।

संगीता - जी साब।

करोड़ीमल - लो फोन। कोई साहब तुम से बात करने मांगता है।

संगीता - हल्लो सर।

वेंकटेश्वर - वी पिल्लई, चाय होटल, ह्यूमन राईट लॉ दिल्ली।

संगीता - (चौंकन्ना होती है। काला आदमी, होटल वाले को याद करती है) जी..जी..जी..सर।

वेंकटेश्वर - मुझे भी तुम्हारे जैसा एक नौकरानी चाहिए। तुम्हारा साब को बोलो।

संगीता - जी जी सर....। इनका नम्बर लिखिए...।

वेंकटेश्वर - हां हां बोलो.....।

संगीता - 065623....।

वेंकटेश्वर - अच्छा, साब को दो....हल्लो मित्तल जी ओके।..... प्रभुदयाल!

प्रभुदयाल - जी सर।

वेंकटेश्वर - तुम्हारी बेटी मिल गयी है। कल फिर आना। अभी पता, फोटो और तुम्हारा फोन नं. छोड़ के जाना।

प्रभुदयाल - ठीक है सर।

(प्रभुदयाल पता फोटो और फोन नं छोड़ कर चला जाता है)

पटाक्षेप

लेपेल - 5

ठांव - सिदा तः को।

सोमय - एन सोमय रेगे।

प्रभुदयाल सेनोः जान चि लाटपाट खाटपाट बाकुआ आर पिल्लई को जपागर ताना।

वेंकटेश्वर - लाटपाट साहब।

लाटपाट - हुं, अंहा, मार काजि में।

वेंकटेश्वर - चेंणे, आर चिड़िमार मियद जाल रेगे किंग फँसेया काना।

खाटपाट - आउच!

(डन्डा ओते रे उईयूगो तना, हलंग जद लो)

लाटपाट - बोएवो।

खाटपाट - जी हुजूर।

लाटपाट - काजि अलोम तँड़ाया।

खाटपाट - जी, बीवी, गुलाम, साहेब आर....।

लाटपाट - पान पराग।

खाटपाट - जी हुजूर। बाकुआ आ...आ।

बाकुआ - जी मालिक।

खाटपाट - (ती डँन्डोः कोते पान-पराग आउ रःर उदुबाई तना)

लाटपाट - हाँ चेणे आर चिड़िमार....?

वेंकटेश्वर - चेंणे आर चिड़िमार मियद जाल रेगे किंग फँसेया कना। उकुनिःम सबा? चेंणे चि चिड़िमार?

लाटपाट - ऊच! बरन किंग कईंगया।

खाटपाट - (एकेलन तान लोः) हुजूर, साहब बीवी गुलाम लाटपाट आर

दृश्य - 5

स्थान - पूर्ववत्।

समय - पूर्ववत्।

प्रभुदयाल के चले जाने के बाद वेंकटेश्वर लटपट, खटपट, बकुआ आपस में बात करते हैं।

वेंकटेश्वर - लटपट साहब।

लटपट - कहा जाए।

वेंकटेश्वर - शिकार और शिकारी दोनों एक जाल में फंस गए हैं।

खटपट - आउच! (डंडा जमीन पर गिर पड़ता है। उसे उठाते हुए)

लटपट - बच्चा!

खटपट - जी हुजूर।

लटपट - बात नहीं बिगाड़ो।

खटपट - जी बीवी, गुलाम, राजा और.....।

लटपट - पान पराग।

खटपट - जी हुजूर। बकुआ आ...आ...आ...।

बकुआ - जी मालिक।

खटपट - (ऊंगलियां उठा कर पान पराग लाने को कहता है)

लटपट - हां तो शिकार और शिकारी....।

वेंकटेश्वर - शिकार और शिकारी एक ही जाल में फंसे हैं। किसको पकड़ना है, शिकार या शिकारी को?

लटपट - नहीं! किसी को भी नहीं।

खाटपाट...।

लाटपाट - बोएवो।

खाटपाट - जी हुजूर।

लाटपाट - काजि अलोम तँड़ाया।

खाटपाट - जी हुजूर।

लाटपाट - तोबे दो चिलका?

वेंकटेश्वर - जाल अलंग ती रे...।

खाटपाट - (बो कोए चपुन ताना, सिरमा कोए संगिल ताना) हुजूर साहेब बीवी गुलाम...।

लाटपाट - बोएवो।

खाटपाट - जी हुजूर।

लाटपाट - काजि अलोम तँड़ाया।

खाटपाट - जी हुजूर।

लाटपाट - आर?

वेंकटेश्वर - झारखण्ड दिसुम ते किंग फुर्...र्..र्..।

लाटपाट - अँ हाँ तोबे दो दोला चेणे सब। बोएवो...।

खाटपाट - जी हुजूर।

लाटपाट - सगिड़ि रे सुनुम...।

खाटपाट - जी हुजूर...बकुआ आ. का।

बाकुआ - जी मालिक।

खाटपाट - (गाड़ी रे सुनुम पेरेः रः चुन्डुलई ताना) साहेब बीवी गुलाम, लाटपाट, आर खाटपाट (रसिका जः ई लोः तो डँड़ो कोए पेन्ठोर बेड़न ताना)

दनंग

खटपट - हुजूर, साहब बीवी गुलाम लटपट और खटपट.... ।

लटपट - बच्चा!

खटपट - हुजूर ।

लटपट - बात नहीं बिगाड़ो ।

खटपट - जी हुजूर ।

लटपट - तब कैसा, पिल्लई साहब?

वेंकटेश्वर - जाल का सूत्र हमारे हाथों ।

खटपट - (सिर पर हाथ फेरता है) हुजूर साहब बीवी गुलाम.... ।

लटपट - बच्चा ।

खटपट - जी हुजूर ।

लटपट - बात नहीं बिगाड़ो । और पिल्लई साहब?

वेंकटेश्वर - झारखण्ड राज्य में उड़ जायेंगे...फुर्र..फुर्र.. ।

लटपट - हां, तब तो चलें शिकार पकड़ने । बच्चा ।

खटपट - हुजूर ।

लटपट - गाड़ी में पेट्रोल.... ।

खटपट - जी हुजूर । बकुआ आ...आ...

बकुआ - जी मालिक ।

खटपट - (गाड़ी में तेल भरने को कहता है) साहेब बीवी गुलाम, लटपट, खटपट

(खुशी से पागल हुआ जा रहा है)

पटाक्षेप

लेपेल - 6

ठांव - कारोड़ीमलः ओड़ाः।

सोमय - 10 बाजे सेतः।

पुलिस गाड़ी ते लाटपाट, खाटपाट, वेंकटेश्वर आर प्रभुदयाल कारोड़ीमलः राचा को तेबाः तादा। आर को र जःईया।

खाटपाट - कारोड़ीमल बाबू...ऊ...ऊ। कारोड़ीमल.... (डोर बेलेः दबाव जादा)

कारोड़ीमल - (सिपई लेल जःई लो) चिलकाया?

खाटपाट - साब (लाटपाट सः इदुबई ताना)

लाटपाट - चि कारोड़ीमल बाबू..लेलगे काम लेल रिकन ताना।

कारोड़ीमल - ओ हो...हिजु पे...हिजु पे...। संगीता ...आ...आ..गिलास रे दः को...।

संगीता - आउ जदाईंग साब...बं...।(संगीता ट्रे रे दः ए आउ जादा)

लाटपाट - (दः नू केद चि) पोकेट याते संगीताः फोटोए उडुंग जादा।

वेंकटेश्वर - दोला नः दो झारखण्ड रः इलि खियाव लेम।

मि. कारोड़ीमल आईंग दो मि. वेंकटेश्वर पिल्लई ह्यूमन राईट लॉ, अध्यक्ष दिल्ली। नि दो प्रभुदयाल संगीताः आपु ते। अयः होन लेः इदि जः ईया।

संगीता - (अपुतेयाः कुड़म रे जपः कन चिः रः ताना)

कारोड़ीमल - (ती जोड़व केयाते) सार...सार...अईंयाः लुतुम थाना रे दो अलोपे दर्जे...। सार...सार..। मालती...ज्योति...सार..सहारा इंटरप्राइजेज सार..।

लाटपाट - मि. कारोड़ीमल! अले दो होड़ो कोअः लुतुम को ले दर्जेया। अपे

दृश्य - 6

स्थान - करोड़ीमल का घर

समय - 10 बजे सबेरे

पुलिस गाड़ी से लटपट, खटपट, वेंकट पिल्लई बकुआ और प्रभुदयाल करोड़ीमल का घर पहुंचते हैं। उसे बुलाते हैं।

खटपट - करोड़ीमल बाबू...ऊ...ऊ (डोर बेल बजाता है)

करोड़ीमल - (सिपाही को देखकर) क्या?

खटपट - (दारोगा की तरफ इशारा करता है) साब!

लटपट - क्यों करोड़ीमल बाबू दिखाई ही नहीं देते हैं। क्या बात है?

करोड़ीमल - हो ओ, आईए आईए दारोगा बाबू, आइए। संगीता...आ...आ...आ... पानी-उनी का इंतजाम करो।

संगीता - अभी लाती हूं साब जी।

(संगीता ट्रे में पानी के गिलास लाती है)

लटपट - (पानी पी कर पॉकेट से संगीता का फोटो निकालता है)

वेंकटेश्वर - (संगीता से) अब चलो झारखंड का हड़िया पिलाओ। मि. करोड़ीमल मैं ह्यूमन राईट लॉ दिल्ली का अध्यक्ष हूं। यह फोटो संगीता का है। यह प्रभुदयाल उसका पिता है। अब हम इसे ले जाते हैं।

संगीता - (पिता की छाती में सिर छिपाए रोती है)

करोड़ीमल - (हाथ जोड़कर) सर...सर..मेरा नाम थाना में दर्ज मत करियेगा। सर...सर...मालती, ज्योति, सहारा इंटरप्राइजेज...सर।

लटपट - मि. करोड़ीमल हम आदमियों के नाम दर्ज करते हैं। आप

लेकन जानवर कोअः दो का, हा...हा...हा...हा। बोएवो...।

खाटपाट - जी हुजूर।

लाटपाट - गाड़ी स्टार्ट रिकाए मे।

खाटपाट - एई..(ड्राईवर के गाड़ी स्टार्ट रःए उदबई तना) साहेब बीवी गुलाम, लाटपाट आर...हे...हे..हे..।

(सोकेब को रूड़ा ताना)

दनंग

लेपेल - 7

ठांव - प्रभुदयालः ओड़ाः।

सोमय - 12 बाजे सिंगि।

12 बाजे सिंगि प्रभुदयाल आर संगीता ओड़ाः खूंटी किंग तेबः जादा। दुआर तः तेबः जाद लोः संगीता मां रूपाः कुड़म रे कुसुन जान चि, कुसुद-कुसुदेः रः ताना। बरन एंगा अपु ते इनिः किंग बुझव जःईया।

रागिनी - अलोम बिटि रःया। ओकोवा होबवा ताई केना एना दो होबा जान गेया।

प्रभुदयाल - हे! एंगम ठीक गे काजि जादा। नाः दो अयर रः होरा लेल लागा तिंगआ।

संगीता - (खींसगे) अयर रः होरा?

रागिनी - हे गेड़ोः। पढ़ावम, चिम....?

संगीता - आईंग पढ़ाव-तड़व कईंयाः।

रागिनी - तोबे दो कोते माँ?

जैसे जानवर के नाम नहीं। बच्चा...आ...आ...।

खटपट - जी हुजूर।

लटपट - गाड़ी स्टार्ट....।

खटपट - जी हुजूर....एइ (ड्राईवर से गाड़ी स्टार्ट करने को कहता है) साहब बीवी गुलाम और हे...हे...हे...

(सब के सब लौटते हैं)

पटाक्षेप

दृश्य - 7

स्थान - प्रभुदयाल का घर।

समय - 12 बजे दिन।

12 बजे दिन प्रभुदयाल बेटी संगीता को लेकर खूंटी अपना घर पहुंचता है। द्वार पहुंचते ही संगीता मां की छाती पर सिर छुपाये रोती है। दोनों माता-पिता मिल कर बेटी को समझाते हैं।

रागिनी - मत रो बेटी। जो होना था सो हो गया।

प्रभुदयाल - हां, तुम्हारी मां ठीक ही कहती है। अभी आगे का रास्ता देखना चाहिए।

संगीता - आगे का रास्ता!

(क्रोध से) आगे मेरा क्या रास्ता है?

रागिनी - हां बेटी। पढ़ोगी या....?

संगीता - मैं फिर पढ़ाई-उढ़ाई नहीं करूंगी।

रागिनी - तब क्या करोगी?

संगीता - दिल्ली (केटेःगे)

बरन किंग - हँ ओड़ो दिल्लीं गे?

संगीता - हे। मागार...।

रागिनी - मागार चानः बिटि?

संगीता - अकिरिंगेन दो का। अकिरिंगआ कान कुड़िहोन को बनचव। इनकुआ जी-जीवोन सुधरव।

रागिनी - ओकोए ताको लोः?

संगीता - यूनाइटेड एक्शन फोरम दिल्ली रेन सोंगे कोलोः।

रागिनी - मन्डि गे जोम लेम।

संगीता - (मन्डि जोम तान लोः) मेयांग तेरे दिल्लींग रूड़ाः। आमीत, नान्दलाल, ज्योति, मालती दादा दाई तको हिजु रेदो अईयाँ जोअर कजिया कोबेन।

रागिनी - हुँ, इनकुगे डुबव तःमां। आर इनकु गेम जोअर जः केवा?

संगीता - हे। सिंह बोंगा इनकु सोबेन क्षेमाए ओमा कोका।

(जोम चाबा केद चि चिपा गसारेः उडुंगो ताना)

दनंग

लेपेल - 8

ठांव - ओड़ा - रेगे।

सोमय - सेतः सात बाजे।

संगीता सेतः रेगे दिल्ली सेनोः नगेन रांचीः हिजुः ताना। चुस्त-दुरुस्त फिट-फाट। तरन रे मियद हाका बुगुली हाका तादा। लेंगा ती रे मियद सूटकेस मेनः। जोम ती रे मोबाईलेः

संगीता - दिल्ली ही लौट जाऊंगी (बुलंद आवाज में)

समवेत स्वर में - (आश्चर्य से) और दिल्ली ही?

संगीता - हां। मगर....।

रागिनी - मगर, क्या बेटी?

संगीता - खुद को बिक जाने के लिए नहीं। बिकी हुई लड़कियों को छुड़ाने के लिए। उनका जीवन सुधारने के लिए।

रागिनी - किन के साथ?

संगीता - यूनाईटेड एक्शन फोरम दिल्ली के कार्यकर्ताओं के साथ।

रागिनी - खाना तैयार है। खा लो।

संगीता - (खाना खाते हुए) कल नहीं, परसो दिल्ली लौट जाऊंगी। अमीत, नंदलाल, ज्योति, मालती दीदी-भाई सब आयेंगे तो मेरा प्रणाम कह देना।

रागिनी - हुं, वही लोगों ने तुमको डुबा दिया है और उन्हें ही नमस्कार कर रही हो!

संगीता - हां मां। हमारा सिंहबोंगा उनके गलत काम के लिए क्षमा कर दे।

पटाक्षेप

दृश्य - 8

स्थान - पूर्ववत

समय - सबेरे सात बजे।

संगीता सबेरे ही दिल्ली जाने के लिए रांची शहर आती है। चुस्त-दुरुस्त जींस पैंट एवं कमीज पहिनी है। कंधे पर एक हैंगर वाली थैली लटकती है। हाथ में मोबाइल फोन है।

सब तादा। जापः रे एंगा आपु ताकिंग तिंगुआ काना। संगीता विदाएः आसे जाः किंगआ।

संगीता - तोबेगा एयंग सेनोः तनईंग। (काटा जाः जाई लोः।)

रागिनी - एसेकर गे बाला हनेः हामीन दूरेम सेनोः ताना। दिल्ली दो नतः रेया चि?

संगीता - (आपु तेयाः काटा जाः केयातेः बिरिद ताना, लन्दा तान लोः) नः दोगा एयंग अईया नगेज दिल्ली दूर बनोः। सिदा गे संगिन अटकर लेना।

प्रभुदयाल - जू मजा लेका तेबःए में।

रागिनी - जू बिटि जू। शैतान को साधु बवई रः कमिम सेनोः तना। ने अईयां आसरए इदि तोरसा जम (बोः रे चपु जःईया)

टुन्डु

दाहिन हाथ में एक सूटकेश धरी है। पास में माता- पिता खड़े हैं। वह पांव छू-छू कर दोनों से विदाई मांगती है।

संगीता - (पांव छूते हुए) अब मां मैं जा रही हूं।

रागिनी - हाय इतना दूर दिल्ली भला अकेली जा रही हो!

संगीता - (हँसते हुए- पिता का पांव छूती है) अब मेरे लिए दिल्ली कोई दूर नहीं रहा मां। पहले ही दूर लगता था।

प्रभुदयाल - जाओ। अच्छी तरह पहुंचो।

रागिनी - जाओ बेटी जाओ। शैतान को साधु बनाने के लिए जा रही हो। सिंहबोंगा और मेरे तरफ से आशीर्वाद लेते जाओ। (सिर छुआती है)

समाप्त

ने पुथि रः हिन्दी-मुण्डारी अलंग-जुम्बुलि

अंक - कड़ी
दृश्य - लेपेल
पटाक्षेप - दनंग
स्थान - ठांव
समय - सोमय
द्वारा - सः ते
लेखक - ओल निः
परिचय - चिपिना
पात्र - नि, निकु-निकु
एजेंट - गाईदार/गाहकी
आशीर्वाद - असरएः
सन्दर्भ - तुका
शब्द - अलंग
कोष - जुम्बुलि
दो शब्द - बरिया अलंग
भूमिका - एने टेः कजि
समीक्षा - जोनोका
अध्यक्ष - मरंग गोमके।

लेखक परिचय

नाम : मंगल सिंह मुण्डा

जन्म स्थान : रंगरोंग, खूँटी (झारखण्ड)

शिक्षा : बी. ए.

व्यवसाय : द.पू.रे. गार्डनरीच, कोलकाता से 2005 में सुपरवाईजर पद से अवकाश प्राप्त।

प्रकाशित पुस्तकें :

हिन्दी : 1. छैला सांदु (उपन्यास)

2. महुवा का फूल (कहानी संग्रह)

मुन्डारी : 1. कामिनाला (काम की खोज में) नाटक।

2. हड़द सुकु (तीता लौकी) मुण्डारी–हिन्दी कहानी संग्रह।

3. दुरंग को कोरे अद जना? (गीत कहाँ खो गये?) मुण्डारी–हिन्दी लघुकथा संग्रह।

सम्प्रति – फिल्म–पटकथा एवं स्वतंत्र लेखन।

PUBLISHER :-

Jharkhand Jharokha

Shop No. D.G. 03, New building, New Market
Ratu Road, Ranchi (Jharkhand),Pin-834001
Mob. - 09973112040, 09471160792
E-mail : jharkhandjharokharanchi@gmail.com

ISBN : 978-93-81720-28-8

978-93-81720-28-8